प्रथम ऋषभ जिन स्तवन ।

(ऐसे गुरु किम पाचिये ए देशी)

वन्दु वेकर जोड़ने, जुग आदि जिनेन्दा । कर्म रिपु गज ऊपरे, मृगराज मुनिन्दा ॥ प्रणमूं प्रथम जिणन्दने जय जय जिन चन्दा ॥ ए आंकड़ी ॥१॥ अनुकूल प्रति-प्रतिकूल सम सही, तप विविध तपिन्दा । चेतन तनु भिन्न लेखवी, ध्यान शुक्ल ध्यावंदा ॥ २ ॥ पुद्गल सुख अरि पेखिया, दुःख हेतु भयाला । विरक्त चित विगस्यो इसो, जाण्या प्रत्यक्ष जाला ॥ ३ ॥ संवेग सरवर झूलतां, उपशम रस लीना । निन्दा स्तुति सुख दुःखे, समभाव सुचीना ॥ ४ ॥ वांसी चन्दन सम पणे, थिर चित्त जिन ध्याया । इम तन सार तजी करी, प्रभु केवल पाया ॥ ५ ॥ हूं बलिहारी तांहरी, वाह वाह जिनराया । उवा दृशा किण दिन आवसी, मुझ मन उमाया ॥ ६ ॥ उगणीसे सुदि भाद्रवे, दशमी दीतवारं ऋषभदेव स्टवे करी, हुओ हर्ष अपारं ॥ ७ ॥

श्री अजित जिन स्तवन ।

(अहो प्रिय तुम वट पाडी ए देशी)

अहो प्रभु अजित जिनेश्वर आपरो, ध्याऊं ध्यान हमेश हो । अहो प्रभु अशरण शरण तूंहीं सही, मेटण

समान के ॥ संभव साहिब समरिये ॥ ए आंकड़ी ॥१॥ तन चंचलता मेटनें, हुआ है जग थी उदासीन के। धर्म शुक्ल थिर चित्त धरै, उपशम रस में होय रहा लीन के ॥ सं० ॥२॥ सुख इन्द्रादिक ना सहु, जाण्या है प्रभु अनित्य असार के। भोग भयङ्कर कटुक फल, देख्या है दुर्गति दातार के ॥ सं० ॥ ३ ॥ सुधा संवेग रसे भरया, पेख्या है पुद्गल मोह पाश के। अरुचि अनादर आण नें, आत्म ध्याने करता विलास के ॥ स० ॥ ४ ॥ संग छांड मन वश करी, इन्द्रिय दमन करी दुर्दन्त के। विविध तपे करी स्वामीजी, घाती कर्म नो कीधो अन्त के ॥ सं० ॥ ५ ॥ हूं तुज शरणे आवियो, कर्म विदारन तूं प्रभु वीर के। तैं तन मन वच वश किया, दुःकर करणी करण महा धीर के ॥ स० ॥६॥ संवत उगणीसे भाद्रवे, सुदि इग्यारस आण विनोद के। संभव साहिब समरिया, पाम्यो है मन अधिक प्रमोद के ॥ सं०॥७॥

श्री अभिनन्दन जिन स्तवन ।

(सतो कलूजी हो हुआ संजम नै त्यार एदेशी)

तीर्थंकर हो चोथा जग भाण, छांड़ि गृहवास करी मति निरमली। विषय विटम्बण हो तजिया विष फल जाण ॥ अभिनन्दन वान्दूं नित्य मनरली ॥ १ ॥ ए

रस निर्मल ध्यायने, पाम्या केवल नाण । वाण सरस वर जन बहु तारिया, तिमिर हरण जग भाण ॥ सु० ॥२॥ फटिक सिंहासण जिनजी फावता, तरु अशोक उदार । छत्र चामर भामडल भलकतो, सुर दुन्दुभि भिणकार ॥ सु० ॥३॥ पुष्प वृष्टि वर सुर ध्वनि दीपती, साहिब जग शिणगार । अनन्त ज्ञान दर्शन सुख बल घणूं, ए द्वादश गुण श्रीकार ॥ सु० ॥४॥ वाणी अमी सम उपशम रस भरी. दुर्गति मूल कषाय । शिव सुख ना अरि शब्दादिक कह्या, जग तारक जिनराय ॥ सु० ॥ ५ ॥ अन्तरजामी रे शरणे आप रे, हूं आयो अवधार । जाप तुमारो रे निश दिन सभरू, शरणागत सुखकार ॥सु०॥ ६ ॥ सवत उगणीसे रे सुदि पक्ष भाद्रव, वारस मंगल-वार । सुमति जिनेश्वर तन मन स्यूं रम्या, आनन्द उपनो अपार ॥ सु० ॥ ७ ॥

श्रीपद्म जिन स्तवन ।

(जन्दवे री देशी छै सुण भगते भगवन्त के एदेशी)

निर्लेप पद्म जिसा प्रभु, पद्म प्रभु पिछाण २ । सयम लीधो तिण समै, पाया चौथो नाण ॥ पद्म प्रभु नित्य समरिये ॥१॥ ए आंकड़ी ॥ ध्यान शुक्ल प्रभु ध्याय ने, पाया केवल सोय २ । दीन दयाल तणी दिशा,

समुद्र नो नीर ए। एहथी तुम वच अधिक विमास ए ॥ भ० ॥४॥ सांभल ने जन वृन्द ए, रोम रोम में पासें आनन्द ए। ज्यांरो मिटै नरकादिक वास ए ॥ भ० ॥ ५ ॥ तूं प्रभु दीन दयाल ए, तूंही अशरण शरण निहाल ए। हूं छूं तुमारो दास ए ॥ भ० ॥ ६ ॥ संवत उगणीसै सोय ए, भाद्रवा सुदि तेरस जोय ए। पहुंची मन नी आश ए ॥ भ० ॥ ७ ॥

श्री चन्द्रप्रभ जिन स्तवन।

(शिवपुर नगर सुहामणो ए देशी)

हो प्रभु चन्द जिनेश्वर चन्द जिस्या, वाणी शीतल चन्दसो न्हाल हो। प्रभु उपशम रस जन सांभलै, मिटै कर्म भ्रम मोह जाल हो ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ ए आंकड़ी ॥ हो प्रभु सूरत मुद्रा सोहनी, वारू रूप अनूप विशाल हो। प्रभु इन्द्र शचि जिन निरखती, ते तो तृप्त न होवै निहाल हो ॥ प्र० ॥ २ ॥ अहो वीतराग प्रभु तूं सही, तुम ध्यान ध्यावै चित्त रोक हो। प्रभु तुम तुल्य ते हुवै ध्यान स्यूं, मन पाया परम सन्तोष हो ॥ प्र० ॥३॥ हो प्रभु लीन पणै तुम ध्यावियां, पामै इन्द्रादिक नी ऋद्धि हो। वले विविध भोग सुख सपदा, लहै आमोसही आदि लब्धि हो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ हो प्रभु नरेन्द्र पद पामै

हरामी हो ॥ सु० ॥ ५ ॥ जे जोधा जग में घणा, सिंह साथे संग्रामी हो। ते मन इन्द्रिय वश करी, जोड़ी केवल पामी हो ॥ सु० ॥ ६ ॥ उगणीसै पुनम भाद्रवी, प्रणमूं सिरनामी हो। मन चिन्तित वस्तु मिले, रटियां जिन स्वामी हो ॥ सु० ॥ ७ ॥

श्री शीतल जिन स्तवन।

(हूं देवा आई ओलंभड़ो सासुजी एदेशी)

शीतल जिन शिवदायका। साहिबजी। शीतल चंद समान हो। निस्नेही। शीतल अमृत सारिखा। साहिबजी। तप्त मिटै तुम ध्यान हो। निस्नेही। सूरत थांरी मन वसी॥ साहिबजी ॥ १ ॥ वन्दे निन्दे तो भणी। साहिबजी राग द्वेष नहीं तास हो। निस्नेही। मोह दावानल तैं मेटियो। साहिबजी। गुण निष्पन्न तुम नाम हो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥ २ ॥ नृत्य करै तुज आगले। साहिबजी। इन्द्राणी सुर नार हो। निस्नेही। राग भाव नहीं उपजे। साहिबजी। ते अन्तर तप्त निवार हो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥ ३ ॥ क्रोध मान माया लोभ ए। साहिबजी। अग्नि सूं अधिको आग हो। निस्नेही। शुक्ल ध्यान रूप जलकरी। साहिबजी। थया शीतलिभूत महा भाग्य हो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥ ४ ॥ इन्द्रिय नोइ-

फलियो जीव रे। किंपाक फल नी उपमा, रहिये दूर थी दूर सदीव रे ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ संयम तप जप शील ए, शिव साधन महा सुखकार रे। अनित्य अशरण अनन्त ए, ध्यायो निर्मल ध्यान उदार रे ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ स्त्रिया-दिक ना संग ते, आलम्बन दुःख दातार रे। अशुद्ध आलम्बन छांडने, धर्यो ध्यान आलम्बन सार रे ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ शरणे आयो तुझ साहिबा, करूं बारम्बार नम-स्कार रे। उगणीसे पूनम भाद्रवी, सुझ वर्त्या जय जय-कार रे ॥ श्रे० ॥ ७ ॥

श्री वासुपूज्य जिन स्तवन।

(इम जाण जपो श्री नवकार एदेशी

द्वादशमा जिनवर भजिये, राग द्वेष मच्छर माया तजिये। प्रभु लाल बरण तन छवि जाणी, प्रभु वासु पूज्य भज ले प्राणी ॥ १ ॥ वनिता जाणी वैतरणी, शिव सुन्दर बरवा हूंस घणी। काम भोग तज्या किम्पाक जाणी ॥ प्र० ॥ २ ॥ अञ्जन मञ्जन स्यूं अलगा, बलि पुष्प विलेपन नहीं बिलगा। कर्म काप्या ध्यान मुद्रा ठाणी ॥ प्र० ॥ ३ ॥ इन्द्र थकी अधिका ओपै, करुणा-गार कदेई नहीं कोपै। वर शाकर दूध जिसी वाणी ॥ प्र० ॥४॥ स्त्री स्नेह पाशा दुर्दन्ता, कह्यां नरक निगोद

पूरत आश ॥ सा० ॥ ५ ॥ तूं ही कृपाल दयाल तूं साहेब, शिवदायक तूं जगनाथ। निश्चल ध्यान करै तुझ ओलख, ते मिलै तुझ संघात ॥ सा० ॥६॥ अन्तर-जामी आप उजागर, मैं तुम शरणो लीध। सवत उगणीसे भाद्रवी पूनम, बछित कार्य सिद्ध ॥ सा० ॥७॥

श्री अनन्त जिन स्तवन।

(पायो युगराज पद मुनि पदेशी)

अनन्त नाम जिन चउदमा रे, द्रव्य चोथे गुणठाण। भलांजी काई द्रव्य०। भावे जिन हुवे तेरमे रे, इतले द्रव्य जिन जाण। भलां०। इतले द्रव्य जिन जाण, पायो पद जिन राजनुं रे, शुद्ध ध्यान निरमल ध्याय। भलां०। पायो पद ॥ १ ॥ जिन चक्री सुर जुगलिया रे, वासूदेव बलदेव भलां० वा०। ए पंचम गुण पावै नहीं रे, ए रीत अनादि स्वमेव भला ए० ॥ पा० ॥२॥ संयम लीधो तिण समै रे, आया सात मे गुण ठाण भलां० आ०। अन्तर मुहूर्त्त तिहां रही रे, छठे बहु स्थिति जाण भलां० छ०॥ पा० ॥ ३ ॥ आठमां थी दोय श्रेणी छे रे, उपशम खपक पिछाण। भलां० उ०। उपशम जाय इग्यारमे रे, मोह दबावतो जाण भलां० मो० ॥ पा० ॥ ४ ॥ श्रेणी उपशम जिन ना लहै रे,

उपशम खपक पिछाण। उपशम जाय इग्यारसें, मोह दबावतो जाण ॥ ४ ॥ श्रेणी उपशम जिन ना लहै, खपक श्रेणी धर खन्त। चारित मोह खपावतां, चढ़िया ध्यान अत्यन्त ॥ ५ ॥ नवमें आदि संजल चिहूं, अन्त समै इक लोभ। दशमें सूक्ष्म मात्र ते, सागार उपयोग शोभ ॥६॥ एकादशमो उलघंन ने, बारमे मोह खपाय। त्रिकर्म एक समै तोड़ता, तेरमें केवल पाय ॥ ७ ॥ तीर्थ स्थापी योग रुधि ने, चउदमां थी शिव पाय। उगणीसै पूनम भाद्रवे, अनन्त रच्या हरषाय ॥८॥

श्री धर्म जिन स्तवन।

(भिक्षु पट भारीमाल भलकै ए देशी)

धर्म जिन धर्म तणा धोरी, नटक मोह-पाश नाख्या तोड़ी। चरण धर्म आत्म स्यूं जोड़ी, अहो प्रभु धर्म देव प्यारा ॥ १ ॥ शुक्ल ध्यान अमृत रस लीना, संवेग-रसे करी जिन भीना। प्याला प्रभु उपशम ना पीना ॥ अ० ॥ २ ॥ जाण्या शब्दादिक मोह जाला, रमणि सुख किंपाक सम काला। हेतु नरकादिक दुःख आला ॥ अ० ॥ ३ ॥ पुद्गल शिव अरि जाण्या स्वामी, ध्यान थिर चित्त आत्म धामी। जोड़ी युग केवल नी पामी ॥४॥ थाप्या प्रभु च्यार तीरथ तायो, आख्यो धर्म

रे। प्रभु को समरण कर नीको रे ॥ १ ॥ अद्भुत रूप अनुपम कुंथु जिन, दर्शन जग मोय को रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ वाणी सुधा सम उपशम रस नी, वालहो जग लोको रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ अनुकम्पा दोय श्री जिन दाखो, मर्म म्हो समदृष्टि को रे ॥ प्र० ॥४॥ असंयती रो जीवणो वांछै। ते सावद्य तहतीको रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ निरवद्य करुणा करी जन तास्या, धर्म ए जिनजी को रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ सम्वत् उगणीसै आसू वदि एकम। शरणो साहिवजी को रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥

श्री अर जिन स्तवन।

(देखो सहियां बनड़ो ए नेमकुमार एदेशी)

अर जिन कर्म अरी नां हन्ता, जगत उद्धारण जिहाज। मोने प्यारा लागै छै जी। अर जिनराज। मोने वालाह लागै छै जी, अर महाराज ॥ १ ॥ परीषह उपसर्ग रूप अरि हण पाया केवल पाज मो० ॥ २ ॥ नयण न धापै निरखतां जी, इन्द्राणी सुरराज ॥ मो० ॥ ३ ॥ थारो जिनेश्वर रूप अनुपम, तूं सुगुणा शिर-ताज ॥ मो० ॥ ४ ॥ वाणी विशाल दयाल पुरुष नी, भूख तृषा जावै भाज ॥ मो० ॥ शरणै आयो स्वाम रे जी, अविचल सुखने काज ॥ मो० ॥ ६ ॥ उगणीसै आसू वदि एकम, आनन्द उपनो आज ॥मो०॥७॥

वाणी रा ॥ प्रभुजी आप प्रबल बड़ भागी ॥ १ ॥ त्रिभुवन दीपक सागी रा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ ए आंकड़ी ॥ चौतीस अतिशय पैंतीस वाणी, निरखत सुर इन्द्राणी। संवेग रस नी वाणी सांभल, हर्ष स्युं आंख्यां भराणी रा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ २ ॥ शब्द रूप रस गन्ध अने स्पर्श, प्रतिकूल न हुवे तुम आगे। ज्यूं पंच दर्शन थास्यूं पग नहीं मांडे, तिम अशुभ शब्दादिक भागे रा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ ३ ॥ सुर-कृत जल स्थल पुष्प पुंजवर, ते कांडी चित्त दीनो। तुझ निश्वास सुगन्ध मुख परिमल, मन भ्रमर सहा लीनो रा ॥प्र०॥ आ० ॥४॥ पंचेन्द्री सुर नर तिरि तुम स्यूं, किम हुवे दुखदायो। एकेन्द्री अनिल तजे प्रतिकूल पणुं, वाजे गमतो वायो रा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ ५ ॥ राग द्वेष दुरदन्त ते दमिया, जीत्या विषय विकारो। दीन दयाल आयो तुझ शरणे, तूं गति मति दातारो रा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ ६ ॥ सम्वत् उगणीसे आसोज तीज कृष्णा, श्री मुनि सुव्रत गाया। लाडनूं शहर मांहि रूड़ी रीते, आनन्द अधिको पाया रा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ ७ ॥

श्री नमि जिन स्तवन।

(परम गुरु पूज्यजी मुझ प्यारा रे पदेशी

नमिनाथ अनाथां रा नाथो रे, नित्य नमण करूं

ध्यान वर ध्याय, इन्द्र शची निरखै हर्षाय ॥ प्र० ॥३॥ नेरिया पिण पामै मन मोद, तुझ कल्याण सुर करत विनोद ॥ प्र० ॥ ४ ॥ राग रयित शिव सुख स्यूं प्रीत, कर्म हणै वलि द्वेष रहित ॥ प्र० ॥ ५ ॥ अचरिजकारी प्रभु थारो चरित्र, हूं प्रणमूं करजोड़ी नित्य ॥ प्र० ॥६॥ उगणीसै वदि चौथ कुमार, नेमि जप्यां पायो सुखसार ॥ प्र० ॥ ७ ॥

श्री पार्श्व जिन स्तवन ।

(पूज्य भीखणजी तुम्हारा दर्शन एदेशी)

लोह कञ्चन करै पारस काचो, ते कहो कर कुण लेवै हो । पारस तूं प्रभु साचो पारस, आप समो कर देवै हो ॥ पारस देव तुमारा दर्शन ॥ भाग भला सोइ पावै हो ॥ १ ॥ तुझ मुख कमल पासे चमरावलि, चन्द्र कान्ति वत सोहै हो । हंस श्रेणि जाणै पंकज सेवै, देखत जन मन मोहै हो ॥ पारस० ॥ २ ॥ फटिक सिंहासण सिंह आकारे, बैठ देशना देवै हो । बन मृग आवै वाणी सुणवा, जाण कै सिंह नै सेवै हो ॥ पारस० ॥३॥ चन्द समो तुज मुख महा शीतल, नयण चकोर हर्षावै हो । इन्द्र नरेन्द्र सुरासुर रमणी, निरखत तृप्ति न पावै हो ॥ पारस० ॥ ४ ॥ पाखण्डी सरागी आप

तथा दातार, छाड़ि रमणी किम्पाक वेलि। संवेग संयम धार ॥ नहीं ॥ ५ ॥ निन्दा स्तुति सम पणे रे, मान अनें अपमान। हर्ष शोक मोह परिहर्‍यां रे। पामै पद निर्वाण ॥ नहीं ॥ ६ ॥ इम बहुजन प्रभु तारिया रे, प्रणमुं चरम जिनेन्द। उगणीसै आसोज चौथ बदि, हुओ अधिक आनन्द ॥ नहीं ॥ ७ ॥



५ मिथ्याती ने भली करणी लेखे सुव्रती कह्यो छे।

(साख सूत्र उत्तराध्ययन अ० ७ गा० २०)

६ क्रियावादी सम्यग्दृष्टि (मनुष्य तिर्यंच) एक वैमाणिक टाल और आऊषो न बांधे।

(साख सूत्र भगवती ३० उ० १)

७ मिथ्याती मास २ खमण तप करै, तथा सुई नो अग्र पे आवे तेतलाज अन्न नो पारणो करै, पिण सम्यग्दृटि ना चारित्र धर्म नी सोलमी कला पिण नावे तेहनो न्याय।

(उत्तराध्ययन अ० ६ गा० ४४)

८ मिथ्याती मास २ खमण तप करै, पिण माया थी अनन्त संसार रुले।

(सूयगडांग श्रुतस्कन्ध १ अ० २ उ० १ गा० ६)

६ जीव अजीव जाणै नहीं तेहना पच्चखाण दुपच्च-खाण कह्या तेहनो न्याय।

(भगवती श० ७ उ० २)

१० भगवत दीचा लियां पहली, २ वर्ष झाझा (अधिका) घर मे विरक्त पणे रह्या तथा काचो पाणी न भोगव्यो।

(प्रथम आचारांग अ० ६ उ० १ गा० ११)

११ जे तत्त्व ना अजाण मिथ्याती, त्यांरो अशुद्ध

१६ अप्रमादी साधु ने अणारम्भी कह्या।

(भगवती श० १ उ० १)

१७ असोच्चा केवली अधिकारे इम कह्यो—तपस्या-दिक थी समदृष्ट पामै।

(भगवती श० ९ उ० ३१)

१८ सूरियाभ ना अभियोगिया देवता भगवान ने वांद्या तिवारे भगवान कह्यो—ए वन्दना रूप तुम्हारो पूराणो आचार छै १ ए तुम्हारो जीत आचार छै २ ए तुम्हारो कार्य छै ३ ए वंदना करवा योग्य छै ४ ए तुम्हारो आचरण छै ५ ए वंदनानी म्हारी आज्ञा छै। ६।

(रायप्रसेणी देवताधिकार)

१९ खंधक सन्यासी, गोतम ने पूछ्यो, हे गोतम! तुम्हारा धर्माचार्य महावीर ने वांदां यावत् सेवा करां। तिवारे गोतम कह्यो, हे देवानुप्रिय! जिम सुख होवे तिम करो पिण विलम्ब मत करो।

(भगवती श० २ उ० १)

(क) दीक्षा नी आज्ञा पर भगवत पार्श्वनाथ 'अहं सुहं' पाठ कह्यो।

(पुप्फ चूलिया)

१७ अन्य दर्शणी पिण सत्य वचन ने आदर्यो ।

(प्रश्न व्याकरण संवरद्वार २)

१८ वाण व्यन्तर ना देवता देवी बनखंड ने विषे बेसे, सूवे जाव क्रीड़ा करै। पूर्व भवे भला प्राक्रम फोडव्या तेहना फल भोगवै।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

१९ मिथ्याती प्रकृति भद्रादि गुण थी वाणव्यन्तर देवता थाय ।

(उववाई प्रश्न ७)

दानाऽधिकारः ।

---

१ असंयती ने दीधां पुन्य पाप को न्याय ।

२ आणन्द श्रावक इह विधि अभिग्रह लीधो—जे हूं आज थकी अन्य तीर्थीने अन्य तीर्थी देवने तथा अन्य तीर्थीना ग्रह्या अरिहन्तना चैत्य साधु भ्रष्ट थया । ए तीना प्रति वांदूं नहीं, नमस्कार करूं नहीं, अशनादिक देऊं नहीं देवाऊं नहीं, बिना बतलायां एकवार तथा घणी वार बोलाऊं नहीं, तथा अशनादिक च्यार आहार देऊं नहीं ।

५ साधुनी हेला निन्दा करतो अशनादि देवै तिहां "पड़िलाभित्ता" पाठ कह्यो।

(भगवती श० ५ उ० ६)

(क) तथा साधु ने वंदना नमस्कार करतो थको अशनादिक देवै तिहां पिण "पड़िलाभित्ता" पाठ कह्यो।

(भगवती श० ५ उ० ६)

६ पोट्टिला आर्या महासती ने अशनादिक दीधा तिहां "पडिलाभे" पाठ कह्यो। ते माटे "पडिलाभेइ" नाम देवा नो छै पिण साधु असाधु जाणवा रो नहीं।

(ज्ञाता अध्ययन १४)

७ साधु ने अशनादिक वहिरावे तिहां "दलएज्जा" पाठ कह्यो छै। ते माटे "दलएज्जा" कहो भावे "पडिलाभेज्जा" कहो दोनों एक अर्थ छै।

(आचारांग श्रु० २ अ० १ उ० ७)

८ सुदर्शण सेठ शुकदेव सन्यासी ने अशनादिक आप्यो तिहां "पडिलाभमाणे" पाठ कह्यो।

(ज्ञाता अ० ५)

९ 'पडिलाभ' नाम देवा नो हिज छै।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ५ गा० ३३)

११ भगु मे पुत्रां कह्यो, वेद भण्यां त्राण शरण न हुवे तथा ब्राह्मण जिमायां तमतमा जाय। (तमतमा ते अंधारा मे अंधारो) एहवी नर्क।

(उत्तराध्ययन अ० १४ गा० १२)

१२ श्रावक पिण विप्र जिमाड़े तेहनो न्याय च्यार प्रकारे नर्कायु बांधे तिणे करी ओलखायो।

(भगवती शतक ८ उ० ६)

(क) वलि श्रावक पिण विप्र जिमाड़े तिण ऊपर बालमर्ण थी अनन्ता नर्क ना भाव। तेहनो न्याय। (भगवती श० २ उ० १)

१३ जे सावद्य दान प्रशंसे तेहने छः काय नो वध नो वंछणहार कह्यो। अने वर्त्तमान काले निषेधे त्यांने अंतराय नो पाड़नहार कह्यो। ते माटै साधु ने वर्त्तमान में मौन राखिवे कही।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ११ गा० २०, २१)

१४ दान देवै लेवै, इसो वर्त्तमान देखी गुण दूषण कहणो नहीं।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ५ गा० ३३)

१५ नन्दण मणिहारो दानशालादिक नो घणो आरम्भ करी मरी ने पोता री बावड़ी मेज डेडको थयो।

(ज्ञाता अ० १३)

मांसादि भोगव्या ? तेहना फल ए नर्क समान दुःख भोगवै छै। तो जोवो नी कुपात्र दान ने चौड़े भारी कुकर्म कह्यो।

(दुःखविपाक अ० १)

१२ ब्राह्मणांने पापकारी क्षेत्र कह्या।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० १४)

२३ पन्द्रह कर्मादान ने व्यापार कह्या।

(उपासकदशा अ० १)

२४ भात पाणी थी पोष्यां धर्माधर्म नो न्याय।

(उपासकदशा अ० १)

२५ तुंगिया नगरी ना श्रावकां नो उघाड़ा बारणा रो न्याय।

(भगवती श० २ उ० ५ टीका में)

२६ श्रावक ना त्याग ते व्रत अने आगार ते अव्रत।

(उववाई प्रश्न २० तथा सूयगडांग श्रु० २ अ० २)

२७ दश प्रकार ना शस्त्र कह्या तिणमें अव्रतने भाव शस्त्र कह्यो। (ठाणाङ्ग ठाणे १०)

२८ जे श्रावक देशथकी निवर्त्यों अने देशथकी पच्चखाण कीधा तिणे करी देवता थाय। पिण अव्रत थी देवता न हुवै।

(भगवती श० १ उ० ८)

गृहस्थी नी व्यावच्च कियां, करायां, वलि अनु-
मोद्यां २८ मो अणाचार कह्यो ।

(दशवैकालिक अ० ३ गा० ६)

इग्यारमी पड़िमामें पिण प्रेम बंधण तूट्यो
नथी । (दशा श्रुतस्कंध अ० ६)

पड़िमाधारी रे कल्प ऊपर अम्बड़ सन्यासी ना
कल्प नो न्याय ।

(उववाई प्रश्न १४)

अनेरा सन्यासी नो कल्प ।

(उववाई प्रश्न १२)

वर्ण नाग नतुओ सग्राम मे गयो तिहां एहवो
अभिग्रह धार्यो—कल्पै मुझने जे पूर्वं हणै तेहने
हणवो । जे न हणै तेहने न हणवो ।

(भगवती श० ७ उ० ६)

जे एकेक अन्यतीर्थी थकी गृहस्थ श्रावक देश
व्रते करी प्रधान अने सर्व श्रावक थकी साधु सर्व
व्रते करी प्रधान ।

(उत्तराध्ययन अ० ५ गा० २०)

श्रावक नी आत्मा अधिकरण कही छै । अधि-
करण ते छवकायनो शस्त्र जाणवो ।

(भगवती श० ७ उ० १)

पोताना पाप टालवा भणी नेमनाथ भगवान पाछा फिरया ।

(उत्तराध्ययन अ० २२ गा० १८-१९)

मेघकुमार नो जीव हाथीने भवे सुसलानी अनुकम्पा कीधी सुसला ने च्यार नामे करी बोलायो ।

(ज्ञाता अ० १)

(क) तथा मढाई निग्रन्थ ने छः नामे करी बोलायो ।

(भगवती श० २ उ० १)

पड़िमाधारी नो कल्प 'अहाय गहाय' पाठ नो अर्थ ।

(दशाश्रुत स्कंध अ० ७)

रागद्वेष आणी 'मार तथा मत मार' इम कहिवो वर्ज्यो ।

(सूयगडांग श्रुतस्कन्ध २ अ० ५ गा० ३०)

गृहस्थां ने मांहो मांही लड़ता देखी—एहने हण तथा एहने मत हण एहवो मन में पिण विचार न करै ।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १)

संयम जीवितव्य वधारवो कह्यो।

(उत्तराध्ययन अ० ४ उ० ७)

संयम जीवितव्य दुर्लभ कह्यो।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १)

मिथिला नगरी बलती देखी, नमीराजर्षि साह्मो न जोयो। वलि कह्यो म्हारे राग द्वेष करवा माटे बाह्लो दुबाह्लो एक पिण नहीं। ए मिथिलापुरी बलतां थकां मांहरो किंचित् मात्र पिण बलै नथी। मैं तो (संयम मे सुख से जीवूं अने सुख से बसूं छूं।

(उत्तराध्ययन अ० ९ गा० १२-१३-१४-१५)

देवता, मनुष्य. तिर्यञ्च ए तीनां नुं मांहो मांही विग्रह देखी असुक नी जय होवो अने असुक नी अजय होवो एहवो बचन साधु ने बोलणो नहीं।

(दशवैकालिक अ० ७ गा० ५०)

वायरो, वर्षा, शीत, तावड़ो. राज विरोध रहित, सुभिक्ष पणो, उपद्रव रहित पणो, ए सात बोल हुवो इम साधु ने कहिवो नहीं।

(दशवैकालिक अ० ७ गा० ५१)

समुद्रपाली चोर ने मरतो देखी वैराग्य पामी

नावां में पाणी आवती देखी साधु ने गृहस्थ प्रते बतावणो नहीं।

(आचारांग श्रु० २ अ० ३ उ० १)

साधु अनुकम्पा आणी त्रस जीव ने बांधे बंधावे तथा बांधते प्रते भलो जाणे तथा बंधिया जीवां ने अनुकम्पा आणी छोडे, छुड़ावे छोड़ते ने भलो जाणे तो प्रायश्चित कह्यो।

(निशीथ उ० १२ बोल १-२)

साधु कुतूहल निमित्त त्रस जीव ने बांधे बंधावे अने छोड़े छुड़ावे तो प्रायश्चित कह्यो।

(निशीथ उ० १७ बोल १-२)

जे साधु पच्चखाण भांगे अने भांगता ने अनुमोदे तो दण्ड कह्यो।

(निशीथ उ० १२ बोल ३-४)

गृहस्थ साधु नी अनुकम्पा याणी तैलादि मर्दन करै तिहां 'कोलुण वडियाए' पाठ कह्यो।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १)

हरिणगवेषी सुलसांनी अनुकम्पा कीधी।

(अन्तगढ़ वर्ग ३ अ० ८)

कृष्णजी डोकरानी अनुकम्पा करी ईंट उपाड़ी।

(अन्तगढ़ वर्ग० ३ अ० ८)

४४ भगवान शीतल तेजू लब्धि करी गोशाले ने बचायो तिहां 'अणुकम्पणट्ठाए' पाठ कह्यो ।

(भगवती श० १५)

लब्धि अधिकारः ।

१ वैक्रिय तथा तेजस लब्धि फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया कही ।

(पन्नवणा पद ३६)

२ आहारिक लब्धि फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया कही ।

(पन्नवणा पद ३६)

३ आहारिक लब्धि फोड़े तिण ने प्रमाद आश्री अधिकरण कह्यो ।

(भगवती श० १६ उ० १)

४ जंघाचारण अथवा विद्याचारण लब्धि फोड़ी विना आलोयां मरै, तो विराधक कह्यो ।

(भगवती श० २० उ० ९)

५ वैक्रिय लब्धि फोड़े तिण ने मायी कह्यो अने आलोयां विना मरै, तो विराधक कह्यो ।

(भगवती श० ३ उ० ४)

४ धर्म घोषना साधां नागश्री ब्राह्मणी ने बाजार मे हेली निन्दी ।

(ज्ञाता अध्ययन १६)

५ सेलक ऋषि ने उसन्नो पासत्थो कह्यो ।

(ज्ञाता अ० ५)

६ गोशाला नो जीव विमलवाहन राजा ने सुमंगल नामे अणगार, तेजू लब्धि करी हणस्ये ।

(भगवती श० १५)

७ खन्धक नामे अणगार संथारो कीधो तिहां 'आलोइय पडिक्कन्ते' पाठ कह्यो ।

(भगवती श० २ उ० १)

८ तिसक मुनि ने छेहड़े तिहां 'आलोइय पडिक्कन्ते' पाठ कह्यो ।

(भगवती श० ३ उ० १)

९ कार्तिक सेठ ने छेहड़े तिहां 'आलोइय पडिक्कन्ते' पाठ कह्यो ।

(भगवती श० १८ उ० २)

१० कषाय कुशील नियण्ठा नो वर्णन ।

(भगवती श० २५ उ० ६)

११ दृष्टिवाद नो धणी पिण वचन खलावे ।

(दशवैकालिक अ० ८ गा० ५०)

वान प्रवर्या दीधी। तोने शिष्य कियो। तोने सिखायो अने तोने बहुश्रुति कियो। तूं भगवान सूं इज मिथ्यात्व पडिवज्जे छै ?

(भगवती श० १५)

३ भगवान पिण कह्यो—हे गोशाला ! मैं तोने प्रवर्या दीधी।

(भगवती श० १५)

४ गोशाला ने कुशिष्य कह्यो।

(भगवती श० १५)

गुणवर्णनाऽधिकारः।

---

१ गणधरां भगवान ना गुण किया।

(आचारांग श्रु० १ अ० ९ उ० ४ गा० ८)

२ भगवान, साधां ना अनेक गुण किया।

(उववाई प्रश्न २१)

३ कोणक ने माता पिता नो विनीत कह्यो।

(उववाई)

४ श्रावकां ने धर्म ना करणहार कह्या।

(उववाई प्रश्न २०)

७ कृष्णादिक तीन लेश्या प्रमादी साधु में हुवे।

(भगवती श० १ उ० १)

८ तेजू पद्म लेश्या सरागी में हुवे।

(भगवती श० १ उ० २)

९ संयती में पिण कृष्ण लेश्या हुवे।

(पन्नवणा पद १७ उ० १)

वैयावृत्ति अधिकारः।

---

१ यक्ष छात्रां ने ऊन्धा पाड्या ते हरकेशी नो व्यावच कह्यो।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ३२)

२ सूर्याभदेव नो नाटक रूप भक्ति कही।

(रायप्रसेणी)

३ भगवान ना अङ्गोपाङ्ग ना हाड भक्तिइं करी देवता ग्रहण करै।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

४ वीस बोल करी तीर्थंकर गोत्र बंधे।

(ज्ञाता अ० ८)

५ साता दियां साता हुवे इम कहे ते आर्य मार्ग

तथा कोई अनेरा साधुनी अर्श छेदतां अनुमोदे तो मासिक प्रायश्चित आवै।

(निशीथ उ० १५ बोल ३१)

१३ साधुरो गूमड़ो गृहस्थ छेदै तो साधुने मने करी अनुमोदनो नहीं तथा वचन अने काया करी करावे नहीं।

(आचारांग श्रु० २ अ० १३)

विनयाऽधिकारः।

---

१ दोय प्रकार नो विनय मूल धर्म कह्यो साधुना पंच महाव्रत ते साधु नो विनय मूल धर्म अने श्रावकना १२ व्रत तथा ११ पड़िमा ते श्रावक नो विनयमूल धर्म। (ज्ञाता अ० ५)

२ पाण्डुराजा अने पांच पाण्डव माता कुन्ता सहित नारदसे त्रिप्रदक्षिणा देई वन्दना नमस्कार कियो। घणो विनय कियो।

(ज्ञाता अ० १६)

३ जिम पाण्डु नारद नो विनय कियो तिमहिज कृष्ण पिण नारद नो विनय कियो।

(ज्ञाता १६)

१२ सर्वानुभूति अणगार गोशाले ने श्रमण माहण नो हिज विनय करवा कह्यो ।

(भगवती श० १५)

१३ अठारह पाप सूं निवर्तै तेहने माहण कह्यो ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १६)

१४ माहण नाम साधु रो हिज कह्यो ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० १)

१५ त्रस स्थावर त्रिविधे २ न हणे तेहने माहण कह्यो । तथा और भी अनेक लक्षण माहण ना बताया ।

(उत्तराध्ययन अ० २५ गा० १९ से २९)

१६ समण माहण सर्व अतिथि नो नाम कह्यो ।

(अनुयोग द्वार)

१७ श्रावक ने एतला नामे करी बोलाणो कह्यो—हे श्रावक ! हे उपाशक ! हे धार्मिक ! हे धर्मप्रिय ! एहवा नामा करी बोलावणो कह्यो ।

(आचारांग श्रु० २ अ० ४ उ० १)

आत्मकाऽधिकारः ।

१ पंच आस्रव द्वार कह्या ।

(ठाणांग ठा० ५ तथा समवायांग स० ५)

(क) तथा मिथ्यादृष्टि ने अरूपी कही ।

(भगवती श० १२ उ० ५)

२ पंच आस्रव ने कृष्ण लेश्या ना लक्षण कह्या ।

(उत्तराध्ययन अ० ३४ गा० २१-२२)

३ सम्यक् अने मिथ्यात्व ने जीव क्रिया कही ।

(ठाणाङ्ग ठा० २ उ० १)

४ दश प्रकार नो मिथ्यात्व कह्यो ।

(ठाणांगठाणे १०)

५ अठारह पाप में वर्ते तेहिज जीव अनें तेहिज जीवात्मा कही ।

(भगवती श० १७ उ० २)

६ जीव अजीव परिणामी रा दश २ भेद कह्या ।

(ठाणाङ्ग ठा० १०)

७ कषाय, जोग दर्शण ए आत्मा कही ।

(भगवती श० १७ उ० २)

८ उदय निष्पन्न रा तेतीस बोलां ने जीव कह्या ।

(अनुयोग द्वार)

५ पाणी में डूबती थकी साध्वी ने साधु बाहिर काढे तो आज्ञा उलंघे नहीं ।

(बृहत्कल्प उ० ६)

६ रात्रि में सिझायदिक ने अर्थे बाहिर जावणो कल्पै ।

(बृहत्कल्प उ० १)

शीतल आहाराऽधिकारः ।

---

१ ठण्डो आहार भोगवणो कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० ८ गा० १२)

२ भगवन्त ठण्डो आहार लीधो कह्यो ।

(आचारांग श्रु० १ अ० ६ उ० ४)

३ धन्ने अणगार न्हाखितो आहार लियो ।

(अनुत्तर उववाई)

४ अरस निरस तथा शीतलादिक आहार भोगवो । साधु ने द्वेष न करिवो ।

(प्रश्न व्याकरण अ० १०)

९ अभाजन ने सूत्र सिखावे त्यांने अरिहन्त नी आज्ञा ना उलङ्घनहार कह्या ।

(सूर्य प्रज्ञप्ति पादु० २०)

१० अर्थ ने पिण 'सूय धम्मे' कह्यो ।

(ठाणांग ठा० २ उ० १)

११ सूत्र आश्री तीन प्रत्यनीक कह्या ।

(भगवती श० ८ उ० ८)

१२ पंचेन्द्रिय ना उपयोग ने श्रुत कह्यो ।

(पन्नवणा पद २३ उ० २)

१३ भावश्रुत ना १० नाम पर्यायवाची कह्या ।

(अनुयोग द्वार)

निरवद्य क्रियाऽधिकारः ।

१ अठारह पाप सूं निवर्त्यां कल्याणकारी कर्म बंधे ।

(भगवती श० ७ उ० १०)

२ वन्दणा करतां नीच गोत्र खपावे ।

(उत्तराध्ययन अ० २९ बोल १०)

३ धर्मकथा सूं शुभ कर्म बंधे ।

(उत्तराध्ययन अ० २९ बोल २३)

१३ गुरु नी आज्ञा आराधे तिणने विनीत कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० २)

निग्रन्थाहाराऽधिकारः ।

---

१ साधु प्राशुक आहार भोगावै तो ७ कर्म ढीला पाड़े ।

(भगवती श० १ उ० ६)

२ ज्ञान दर्शण चारित वहवाने अर्थे साधु आहार करै ।

(ज्ञाता अ० २)

३ साधु मोक्ष ने अर्थे आहार करै ।

(ज्ञाता अ० १८)

४ साधु जयणा सूं आहार करै तो पाप कर्म बंधे नही ।

(दशवैकालिक अ० ४ गा० ८)

५ साधु ना आहार नी वृत्ति असावद्य कही ।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० ६२)

६ निर्दोष आहार लेवणहार तथा देवणहार दोनों शुद्ध गति में जावै ।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० १००)

७ साधु ने भाव निद्राइ करी जागतो कह्यो।

(आचारांग श्रु० १ अ० ३ उ० १)

एकाकि साधु-अधिकारः।

---

१ ग्रामादिक का घणा निकाल पैसार हुवे तिहां घणा आगमना जाण बहुश्रुति ने पिण एकाकि पणे न कल्पै।

(व्यवहार उ० ६)

२ ग्रामादिक तथा सरायादिक ने विषे घणा निकाल पैसार हुवे तिहां अगडसुया ते निशीथ ना अजाण त्यांने एकाकि पणे न कल्पै।

(व्यवहार उ० ६)

३ ग्रामादिक ना जुदा २ निकाल हुवे तिहां साधु साध्वी ने भेलो रहिवो कल्पै।

(वृहत्काल्प उ० १ बोल ११)

४ एकलो रहै तिण मे आठ दोष कह्या।

(आचारांग श्रु० १ अ० ५ उ० १)

५ सूत्र अने वय करी अव्यक्त तेहने एकाकि पणो कल्पै नहीं। तथा सूत्र अने वय करी व्यक्त छै

राग द्वेष ने अभावे एकलो कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० १०)

जे हूं रागद्वेष ने अभावे ज्ञानादि सहित एकलो विचरस्यूं इम विचारी दीक्षा लेवै ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ४ उ० १ गा० १)

घर छांडी रागद्वेष ने अभावे एकलो विचरै ।

(उत्तराध्ययन अ० १५ गा० १६)

तीन मनोरथ में चिन्तवे जे किंवारे हूं एकलो थई दशविधि यति धर्म धारी विचरस्यूं तेहनो न्याय। गुरु कह्यो—हे शिष्य! तोने एकलपणो म होज्यो ।

(आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० ४)

उच्चार पासवणाऽधिकारः ।

वड़ी नीति या लघु नीति परठी ने वस्त्र करी पूंछे नहीं तथा पूंछता ने अनुमोदे नहीं, तो प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० ४ बोल ३७)

२ मतिज्ञान ना दोय भेद १ श्रुत निश्चित २ अश्रुत निश्चित । तिहां जे सूत्र विना ही ४ वुद्धिइं करी सूत्र सूं मिलतो अर्थ ग्रहण करै, सूत्र विना ही वुद्धि फैलावे ते अश्रुत निश्चित मतिज्ञान नो भेद कह्यो छै । वली कह्यो पूर्वें दीठो नहीं सुण्यो नहीं ते अर्थ तत्काल ग्रहण करै ते उत्पात नी वुद्धि अश्रुत निश्चित मतिज्ञान नो भेद कह्यो ।

(सास्वसूत्र नन्दी)

३ जे भारत रामायणादिक मिथ्यादृष्टि ना कीधा ते मिथ्यादृष्टिरे मिथ्यात्व पणै ग्रह्या अने सम्यग्दृष्टिरे सम्यक्त पणै ग्रह्या ।

(सास्व सूत्र नन्दी)

४ च्यार प्रकार ना काव्य कह्या १ गद्यवंध २ पद्यवन्ध ३ कथा करी ४ गायवेकरी ।

(ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० ४)

५ गाथाइं करी वाणी करी, वाणी कथी एहवुं कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० १३ गा० १२)

६ वाजारे लारै ताल मेली गायां दण्ड कह्यो ।

(निशीथ उ० १७ वोल १४०)

साधु ने देई समाधि उपजावे, तो पाछो समाधि पावे। (भगवती श० ७ उ० १)

६ शुद्ध व्यवहार करी ने आधाकर्मी लियो निर्दोष जाणी ने तो पाप न लागे।

(सूयगडांग श्रु० २ उ० ५ गा० ८-९)

(क) वीतराग जोयर चाले तेहथी कुक्कुटादिक ना अण्डादिक जीव हणीजे तेहने पिण पाप न लागे। पुण्य नी क्रिया लागे शुद्ध उपयोग माटे।

(भगवती श० १८ उ० ८)

(ख) साधु ईर्याइं करी चालतां जीव हणीजे तो तेहने पिण पाप न लागे। हणवारो कामी नहीं ते माटे।

७ अल्प (नहीं) वर्षा में भगवान विहार कीधो।

(भगवती श० १५)

८ अल्प प्राणी बीज छे जिहाँ ते स्थानके साधु ने आहार करवो।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ३५)

९ अल्प प्राण बीजादिक होवे तिण स्थान के शुद्ध करी आहार करवो।

(आचारांग श्रु० २ अ० १ उ० १)

वारणो ढक्यो हुवे तो धनी नी आज्ञा मांगी ने पूंजकर द्वार उघाड़णो ।

(आचारांग श्रु० २ अ० १ उ० ५)

५ एहवो स्थानक साधु ने रहिवो नही जे उपाश्रय माहीं लघु नीति तथा वड़ी नीति परठण री जागा न हुवे अने गृहस्थ बारला किमाड़ जड़ता हुवे तिवारे रात्रि ने विषे अवाधा पीड़तां किमाड़ खोलना पड़े ते खुला देखि माहें तस्कर आवै वतायां न वतायां अवगुण उपजता कह्या [illegible] दोष में प्रथम दोष किमाड़ खोलने को कह्यो तिण कारण साधु ने किमाड़ खोलवो पड़े [illegible] स्थानक रहिवो नहीं ।

(आचारांग श्रु० २ अ० [illegible]

६ साध्वी ने उघाड़े वारने रहिवो नहीं [illegible] हुवे तो पोता नी पछेवड़ी वांधी ने [illegible] उघाड़े वारने रहिवो नहीं कल्पै [illegible] किमाड़ जड़वो अने साधु ने [illegible] रहिवो कल्पै ।

ठाण ॥ ५ ॥ च० ॥ चोरी करै तिणने कह्योजी, आस्रव अदत्तादान। आय लागे तिके अशुभ कर्म छै जी, सात आठ दुख खान ॥ ६ ॥च० ॥ जिण कर्मने उदय करीजी, मैथुन सेवै को अजाण। तिण कर्मने कहिये सहीजी मैथुन चौथो पाप ठाण ॥७॥ मैथुन सेवै तिणने कह्योजी, आस्रव चौथो पाप ठाण। आय लागै ते अशुभ कर्म छै जी, सात आठ दुख खाण ॥८॥च०॥ जिण कर्मने उदय करीजी. परिग्रहो सेवै अयाण। तिण कर्मने कहिये सहीजी, परिग्रह पंचम पाप ठाण ॥९॥ ॥ च० ॥ ममताभाव परिग्रह थकीजी, परिग्रहे आस्रवजाण। आय लागै तिके अशुभ कर्म छै जी, सात आठ दुख खाण ॥१०॥ च०॥ जिण कर्मने उदय करीजी, क्रोध तप्त जीवरा प्रदेश। तिण कर्मने कहिये सहीजी, छठो पाप ठाणो रंस ॥११॥ च०॥ क्रोध स्यूं विगड्या प्रदेशने जी, ते आस्रव कहिये कषाय। आय लागै तिके अशुभ कर्म छै जी, बुद्धिवंत जाणै न्याय ॥ १२ ॥ च० ॥ उदेरी क्रोध करै तसुजी, अशुभ जोग कहिवाय। निरंतर विगड्या प्रदेशने जी, कहिये आस्रव कषाय ॥

नवमे अष्टम गुण ठाण छै जी, शुभ लेश्या

पिण क्रोधादिक स्यूं विगड्या प्रदेशनेजी,

ठाण ॥ ५ ॥ च० ॥ चोरी करै तिणने कह्योजी, आस्रव अदत्तादान। आय लागे तिके अशुभ कर्म छै जी, सात आठ दुख खान ॥ ६ ॥च० ॥ जिण कर्मने उदय करीजी, मैथुन सेवै को अजाण। तिण कर्मने कहिये सहीजी मैथुन चौथो पाप ठाण ॥७॥ मैथुन सेवै तिणने कह्योजी, आस्रव चौथो पाप ठाण। आय लागै ते अशुभ कर्म छै जी, सात आठ दुख खाण ॥८॥च०॥ जिण कर्मने उदय करीजी, परिग्रहो सेवै अयाण। तिण कर्मने कहिये सहीजी, परिग्रह पंचम पाप ठाण ॥९॥ ॥ च० ॥ ममताभाव परिग्रह थकीजी, परिग्रहै आस्रवजाण। आय लागै तिके अशुभ कर्म छै जी, सात आठ दुख खाण ॥१०॥ च०॥ जिण कर्मने उदय करीजी, क्रोध तप्त जीवरा प्रदेश। तिण कर्मने कहिये सहीजी, छठो पाप ठाणो रेस ॥११॥ च०॥ क्रोध स्यूं विगड्या प्रदेशने जी, ते आस्रव कहिये कषाय। आय लागे तिके अशुभ कर्म छै जी, बुद्धिवंत जाणै न्याय ॥ १२ ॥ च० ॥ उदेरी क्रोध करै तसुजी, अशुभ जोग कहिवाय। निरंतर विगड्या प्रदेशने जी, कहिये आस्रव कषाय ॥१३॥ च०। नवमे अष्टम गुण ठाण छै जी, शुभ लेश्या शुभ जोग। पिण क्रोधादिक स्यूं विगड्या प्रदेशनेजी, कषाय आस्रव

जी, च्यार फरश संपेख ॥२३॥ च० । भगवती शतक बारमें जी, पंचम उदेश मझार । ते सहु पाप ठाणा अछे जी, तिणस्यूं वर्णादिक कह्या विचार ॥२४॥ च० । लोभ तणा नाममे कह्याजी, इच्छा मूर्च्छा वंछा जाण । तृष्णा भोगासा आदि दे, ए सगलाई छै पाप ठाण ॥ २५ ॥ च० । कर्म उदयथी जीवना, भाव आशा वंछादिक नाम, तेहिज नाम पाप ठाणा तणा, तिणस्यूं कह्या वर्णादिक ताम, ॥२६॥ च० । क्रोध मान माया लोभ सर्वथा जी, उपशमाया इग्यारमे गुणठाण । उदयनो किरतब मिट गयो जी, जब अकषाय संबर जाण ॥२७॥ च० । अप्रमाद संबर आवा न दे, जे कर्म उदय थी ताय । अण उछाह आलस भावने जी, ते प्रमाद आस्रव जणाय ॥ २८ ॥ च० । मन वचन कायारा व्यापारस्यूं जी, तीजो आस्रव जूदो जणाय, जोग आस्रव छै पांचमोजी, प्रमाद तीजो ताहि ॥२९॥ च० । असंख्याता जीवरा प्रदेशमें, अणउछाहपणो अधिकाय । ते दीसे तीनूं जोगां स्यूं जुदोजी, प्रमाद आस्रव ताय ॥३०॥ च० । ते कर्म उदय वहु मिट गया जी, जवर आवै शुभ जोग । तिण वेल्यां गुणठाणो सातमो जी, अंतर मुहूर्त प्रयोग ॥३१॥ च० । छठे प्रमाद आस्रव थकां जी, लेश्या जोग शुभ आय । अधिक शुभजोग

॥ ढाल तेहिज ॥

स्थित उत्कृष्ट संजत तणीजी, प्रमाद पणे वर्तमान। सर्व काल प्रमाद तणोजी, देश ऊंणी पूर्व कोड़ जाण ॥३७॥ च०। तीजे शतक भगवतीमें कह्योजी, तीजा उदेशा मांय। तिणस्यूं अणउछाह रूप आलस भणीजी, प्रमाद आस्रव जणाय ॥३८॥ च०। ते असंख्यात जीवरा प्रदेश में जी, अणउछाह रूप प्रमाद। ते केवल ज्ञानी गम्य छै जी, वलि बहुश्रुत कहै ते समाध ॥३९॥ च०। चारित्र मोह उदय थकीजी, अव्रत आस्रव अत्याग भाव, ते कर्म क्षयोपशम हुवां छतांजी, प्रथम सर्व व्रत नांव ॥४०॥च०। अशुभ जोग आवे छै साधू तणाजी, उत्कृष्ट छ:मासी दोष। तो पिण अत्याग भाव आश्री नहीं जी, चणरपालण परिणाम निरदोष ॥४१॥ च०। दोष तणो प्राछित लिये जी, पिण अव्रत आस्रव नांहि, तिण स्यूं छठो गुणठाणे छै जी, षट नियंठा कह्या जिनराय ॥४२॥ च। चारित पालणरो मन नहीं जी, तथा दीक्षा आवे जिसो दोष। छठो गुणठाणो जावे तरेजी, व्रत संवर हुवे फीक ॥४३॥ च०। पहिले तीजे मिथ्यात निरंतरै, चौथा लग सर्व इव्रत व्याप, निरंतर देश अव्रत पञ्चमें, तिण सूं समय २ लागे पाप ॥४४॥ च०। छठे प्रमाद आस्रव निरन्तरे, दशमा लग निरन्तर कषाय। निरन्तर पाप लागे तेहने, तीनूं जोगां स्यूं जुदो कहाय ॥४५॥ च०।

आराधना

॥ दोहा ॥

महावीर प्रणमी करी, आराधना अधिकार ।
अन्त्य समय ने जोग्य ए, आखूं तसु दश द्वार ॥ १ ॥
प्रथम आलोयण मन शुद्ध, करवी तज कपटाय ।
व्रत अतिचार आलोवियां, आतम निरमल थाय ॥ २ ॥
उच्चरवा वली व्रत शुद्ध, ऊंचे शब्द उचार ।
अन्तकरण हर्ष आण ने, शांति पणो मनधार ॥ ३ ॥
सगला जीव खमावणा, प्रतिकूल जे नरनार ।
जूजूआ नाम लेई करी, कलुष भाव परिहार ॥ ४ ॥
अष्टादश जे पाप प्रति, वोसिरावे धर प्रीत ।
चौथो द्वार कह्यो इसो, छांडे सर्व अनीत ॥ ५ ॥
अरिहंत सिद्ध साधु तणो, केवली भाषित धर्म ।
पडिवजवा ए शरण चिहुं, पञ्चम द्वार सु पर्म ॥ ६ ॥
दुःकृत नी करवी निन्दा, छट्ठा द्वार मझार ।
अशुभ कार्य पोते किया, तसु निंदा दिल धार ॥ ७ ॥

मिच्छामि दुक्कडं दीजेरा ॥ मु० ॥ २ ॥ श्रा० ॥ सूलपाठ अर्थ विरुद्ध कह्यो हुवे, अक्षर हीणाधिक भाख्यो॥ जोग घोष हीण खोट तणो सहु, मिच्छामि दुक्कडं भाख्योरा ॥ मु० ॥ ३ ॥ श्रा० ॥ विनय करी ने रहित ज्ञान भणियो, सूत अकाले गुणियो । असिझाइ में सझाय करी हुवे, तो मिच्छामि दुक्कड थुणियोरा ॥ मु० ॥ ४ ॥ श्रा० ॥ ज्ञानतणी तथा ज्ञानवन्त नो, अवज्ञा आशातना कीधी । तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं, छिद्र निन्दा तज दीधीरा ॥ मु० ॥ ५ ॥ श्रा० ॥ ते ज्ञान तणा पंच भेद कह्या छै, त्यांरा करी निषेधणा जाणी । ज्ञान तणो वलि उपहास्य कीधो तो, मिच्छामि दुक्कडं पिछाणीरा ॥ मु० ॥ ६ ॥ श्रा० ॥ ज्ञान निन्हवियों ने ज्ञान गोपवियो, इम ज्ञानातिचार आलोवे । वलि दर्शण ना अतिचार आलोवी; कर्मरूप मल धोवेरा ॥ मु० ॥ ७ ॥ श्रा० ॥ दर्शन आचार निःशङ्कता प्रमुख, अठगुण सहित कहीजे । ते गुण सम्यक् प्रकारे न धार्या तो, मिच्छामि दुक्कड दीजेरा ॥ मु० ॥ ८ ॥ श्रा० ॥ सूत साधु ने छःकाय मांहें, जे काइ शङ्का आणी । तेहनो पिण सहु मिच्छामि दुक्कड । त्रिविध २ कर जाणीरा ॥ मु० ॥ ९ ॥ श्रा० ॥ गहन वात काई देखी सिद्धन्त नी; शङ्का भ्रम मन धार्यो । तेहनो पिण सहु मिच्छामि

मुझ मिच्छामि दुक्कडं । हिव म्हें शङ्क निवारीरा ॥मु० १८ ॥ आ० ॥ कंखा ते अन्य मत नी वांछा । तथा पासत्था बुगल ध्यानी ॥ वाह्य क्रिया देखी त्यांरी वंछा किधी तो । मिच्छामि दुक्कडं पिछाणीरा ॥ मु० ॥१९॥ आ० ॥ वितिगिंछा ते सदेह फलनों । प्रशंसा पाषंडी नी कीधी ॥ प्रीत भाव परचो कियो तेहनो । मिच्छामि दुक्कडं प्रसिद्धिरा ॥ मु० ॥ ॥ २० ॥ आ० ॥ इम दर्शण अतिचार आलोवे । हिव चारित्र अतिचारो ॥ समिति गुप्त सहित व्रत न पाल्या तो । मिच्छामि दुक्कडं विचारीरा ॥ मु० ॥ २१ ॥ आ० ॥ इर्य्या समिति पूरी नहीं सोधी । चालंता चिन्तवणा कीधी ॥ अथवा चालंतां वातां करी हुवे । तो मिच्छामि दुक्कडं प्रसिद्धिरा ॥ मु० ॥ २२ ॥ आ० ॥ क्रोध मान माया लोभ तणे वश । वचन काढ्यो मुख-बारै ॥ हास कितोल करी हुवे किण सूं तो । मिच्छामि दुक्कडं म्हारैरा ॥ मु० ॥ २३ ॥आ० ॥ भय वश बोल्यो नें मुख नो अरिपणो । वलि करी विकथा विवादो ॥ तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं हिव मुझ हुइ समाधीरा ॥ मु० ॥ २४ ॥ आ० ॥ एषणां न समिति गवेषणा न करी । शङ्का सहित आहार लीधो ॥ राग द्वेष आण्यो सरस निरस पर । मिच्छामि दुक्कडं दीधीरा ॥ मु० ॥ २५ ॥ आ० ॥

॥ मु० ॥ ३३ ॥ आ० ॥ क्रोध लोभ भय हास परवश पणे। मूर्ख पणे मृषावादो ॥ शङ्काकारी भाषा निश्चय कही हुवे। तो मिच्छामि दुक्कडं समाधोरा ॥ मु० ॥ ३४ ॥ आ० ॥ देव १ गुरु २ साधर्मीनी ३ चोरी। राज ४ गाथापति ५ अदत्तो ॥ आज्ञा लोपी कोई कारज कीधो तो। मिच्छामि दुक्कडं मुदत्तोरा ॥ मु० ॥ ३५ ॥ आ० ॥ आज्ञा विना आहार पाणी वस्त्रादिक। लियो दियो हुवे कोई ॥ आचार्य नी आज्ञा विराधी तो मिच्छामि दुक्कडं होइरा ॥ मु० ॥ ३६ ॥ आ० ॥ आचार्य नी आज्ञा विना दीक्षा दीधी हुवे। विन आज्ञा दीक्षा नो उपदेशो। त्रिविध २ तिण दोष नें निन्दू ॥ मिच्छामि दुक्कडं विशेषोरा ॥ मु० ३७ ॥ आ० ॥ देव मनुष्य तिर्यंच ना मैथुन। काम स्नेह दृष्टि रागे ॥ मन वचन काया कर सेव्या तो। मिच्छामि दुक्कडं सागेरा ॥ मु० ॥ ३८ ॥ आ० ॥ आल जञ्जाल सुपन स्त्रियादिक ना। हस्त कर्मादिक कीधा ॥ हांस रामत ख्याल सर्व तजरनो। मिच्छामि दुक्कडं दीधारा ॥ मु० ॥ ३९ ॥ आ० ॥ सचित्त अचित्त मिश्र द्रव्यनी मूर्छा। वस्त्र पात्र आहार पाणी ॥ साध गृहस्थ ऊपर ममत भावनो। मिच्छामि दुक्कडं दिकाणीरा ॥ मु० ॥४०॥ आ०॥ मर्यादा उपरन्त वस्त्रा-

मिच्छामि दुक्कड तास्योरा ॥ मु० ॥ ४८ ॥ आ० ॥ गणपतिनै वा संत सत्यांरा । अथवा गणना कोई ॥ अवर्णवाद बोल्या हुवे तो । मिच्छामि दुक्कड जोईरा ॥ मु० ॥ ४९ ॥ आ० स्वार्थ अणपूगां गणपति सूं । आण्या कलुष परिणामो ॥ ऊतरतो जो वचन कह्यो हुवे तो । मिच्छामि दुक्कड तामोरा ॥ मु० ॥ ५० ॥ आ० ॥ समकितनें चारित्र ना दाता । गणपति महा उपगारी ॥ अणगमतो ज्यो त्यांसु प्रवर्त्यो । तो मिच्छामि दुक्कड विचारीरा ॥ मु० ॥ ५१ ॥ आ० ॥ भिक्षु गण श्री जिन शासण म्हें । आस्था तास उतारी ॥ शङ्का कंखा घाली ओररैतो । मिच्छामि दुक्कड विचारीरा ॥ मु० ॥ ५२ ॥ आ० ॥ पाप अठारे जाण आजाणे । सेव्यो सेवाया होई ॥ सेवतांनें अनुमोद्या हुवे तो । मिच्छामि दुक्कड जोईरा ॥ मु० ॥ ५३ ॥ आ० ॥ अतिचार मूल उत्तर गुणमें । लाग्यो ते संभारी संभारी ॥ माया रहित आलोई लिये दण्ड । कपट प्रपञ्च निवारी रा ॥ मु० ॥ ५४ ॥ आ० ॥ भोला बालक जेम आलोवै । आचार्यादिक पासो ॥ न्हाय धोयनें निर्मल हुवे जिम । आतम उज्जल जासोरा ॥ मु० ॥ ५५ ॥ आ० ॥ इह विधी आलोवण करै मुनि । ते उत्तम जीव सधीरा ॥ परभव री अति

* दोहा *

प्रथम द्वार आख्यो प्रवर, आलोयण अधिकार।
व्रत उच्चरवा नो हिवे, दाखूं दूजो द्वार ॥ १ ॥

॥ ढाल २ ॥

(माथो धोइ माल सुमारै । दरपणमें मुख देखैजीरे ॥ एदेशी)

पूर्वे गणि आज्ञा थी धारया। पञ्च महाव्रत जाणी जीरे ॥ हिवड़ां पिण सिद्ध अरिहंत गणिनी। शाख करी पञ्चक्खाणीरे ॥ सेणां थईयेजीरे ॥ १ ॥ सर्व प्राणातिपात प्रति पचखूं। तस थावरना प्राणीजीरे ॥ मन वचन काय करी हणवाना। जाव जीव पचखाणीरे ॥ से० ॥ २॥ इमज हणवा तणां त्याग मुझ। वलि हणतो हुवे कोईजीरे॥ ते अनुमोदण तणा त्याग वलि। जाव जीव अवलोईरे ॥ से० ॥ ३ ॥ मृषावाद सर्वथा पचखूं। क्रोधादिक दिल आणीजीरे ॥ मन वच काय करी मृषा वच। बोलणरा पचखाणीरे ॥ से० ॥ ४ ॥ इमज बोलावण तणा त्याग मुझ। अनुमोदण ना एमोजीरे॥ त्रिविध २ वच अलिक तणा इम। जाव जीव लग नेमोरे ॥ से० ॥ ५ ॥ सर्व अदत्ता दानज पचखूं। अदत्त लेवणरा त्यागोजीरे ॥ आदत्त

॥ दोहा ॥

इम व्रत उच्चरिवा तणो, आख्यो दूजो द्वार।
तृतीय द्वार कहिये हिवै, खमायवूं तज खार ॥ १ ॥

॥ ढाल ३ ॥

(सीता आवैरे धर राग पदेशी)

सप्त लक्ष जे जाति पृथ्वीनी । सप्त लक्ष अपकाय ॥ इत्यादिक चउरासी लक्ष जे। जीवायोनि खमाय ॥ ॥ १ ॥ सुगुणां खमाविये तज खार ॥ एआं० ॥ गण में संत सती गुणवंता । सगलां भणी खमाय ॥ निज आतम प्रति नरम करीनें। मच्छर भाव मिटाय ॥ सु० ॥ २ ॥ किणहिक संत सती सुं आया। कलुष भाव जो ताम ॥ कठण वचन तसु कह्या हुवे तो। खामे लेले नाम ॥ सु० ॥ ३ ॥ इमहिज श्रावक अनें श्राविका । सगलां भणी खमाय ॥ कलुष भाव करि कटु वच आख्या। तो नाम लेइनें ताहि ॥ सु० ॥ ॥ ४ ॥ द्रव्यलिंगी वा अन्य दर्शणी। खामें सरल पणेह ॥ क्रोधादिक करी कटु वच आख्याती। नाम लेई पभणेह ॥ सु० ॥ ५ ॥ वडा संतनी करी आशातन। तिहुं जोगे करी ताम ॥ सर्व खमावे उजल भावे।

॥ दोहा ॥

खमत खामणानो कह्यो, तीजो द्वार उदार ।
हिव अष्टादश अघ प्रते, वोसिरावे अणगार ॥ १ ॥

॥ ढाल ४ ॥

(नीकी सीखडलिरे लहिये एदेशी)

प्राणातीपात प्रथम अघ भाख्यो । दूजो मृषावाद ॥ अदत्ता दान तीजो अघ कहिये । चोथो मिथुन विषाद । सुगुणा पाप पङ्क परहरिये । पाप पंक परहरिये दिलसुं ॥ वोसिरावे अघ भार ॥ इहविधि निज आतम निस्तार ॥ सु० ॥ १ ॥ पञ्चम पाप परिग्रह ममता । क्रोध मान माया लोभ ॥ दशमो राग इकादशमो फुन । द्वेष करे चित क्षोभ ॥ सु० ॥ २ ॥ बारमो कहल अभ्याख्यान तेरम । ते पर शिर आल विषाद ॥ चवदमो पिशुन तिको खाय चुगली । पनरमो पर परिवाद॥ ॥ सु० ॥ ३ ॥ जेह असंयम मे रति पामे । अरति संयम रे मांय ॥ रति अरति ए पाप सोलमो । दाख्यो श्री जिनराय ॥ सु० ॥ ४ ॥ सतरमो कपट

॥ इक पक्ष परना अवर्णवाद बोले । अने समभाव सू छे जिसी वस्तु बोलावे ते परपरिवाद पाप नहीं ।

शोभे रह्या। ते देव जिनेन्द्र सु आर्य हो॥ मुझ शरणो मुझ शरणो थावो। अरिहंत नो, सुख करणं भव तरणं शरण भगवंत नो ॥ १ ॥ च्यार कषाय तजी तिणे। चिहुं दिशी मुख दीसंत हो ॥ तसु अतिशय वर अतिशय श्री जिनराजना। चिहुं विधी धर्म कथा कही। करे चिहुं गति दुःखनो अंत हो ॥ मुझ शरणो २ एहवा अरिहंत नो। सुख करणं भव तरणं शरण भगवंतनो ॥मु०॥२॥ दग्ध बीज जिम तरु तणो। अंकुर प्रकट न होयहो ॥ तिम स्वामी तिम० कर्म बीज दग्धहो। भव अंकुर प्रकट हुवे नहीं। तिणसुं अरुहंत कहिये सोयहो ॥ मुझ शरणो २ थावो अरुहंतनो। शिववरणं भव तरण शरण भगवंतनो ॥मु०॥३॥ अंतरंग अरि जीपवे करि। अरिहंत कहिये तासहो ॥ मुझ शरणो मुझ शरण थावो ते अरिहंत नो। पूजण जोग्य तिण जगतनें ॥ वारु अर्हंत कहिये विमास हो मुझ शरणो मुझ शरण थावो ते अर्हंत नो सुखकरणं शिव वरण शरण भगवंतनो ॥मु०॥४॥ दुर्लंघ्य संसार समुद्र-तिरी। जिणे शिव सुख पाम्या सारहो ॥ अविनासी २ लही गति पञ्चमी। सुख आतमीक अति ओपता। रह्या आवागमण निवारहो ॥ मुझ शरणं मुझ शरण थावो ते सिद्धां तणो। सुख शाश्वत सुख० २ सुर थी

पञ्चम गति अनुभंत पिछाणहो ॥ मु० ॥ ११ ॥ छांड्यो सर्व संग स्त्रियादिक तणां। ज्यांरे शत्रु नें मित्र समानहो ॥ तृणमणी सम २ सुख दुःख सम वली। ज्यांरे निन्दा प्रशंसा समानहो ॥ सम मान अनें अपमानहो ॥ मु० ॥ १२ ॥ सप्तवीस गुणे करी शोभता। समता दमता निश दीहहो ॥ शुद्ध किरिया २ मुक्ति पन्थ साधता डरिया नरक निगोद ना दुःख थकी ॥ मुनि लोपै नही जिन लिहहो ॥ मु० ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी परूपियो। बारू तेहिज धर्म विचारहो ॥ हितकारी सुखकारी सुगति तेहथी लहै। वली दुर्गति पड़ता जीवनें ॥ धार राखै ते धर्म उदारहो ॥ सुभ० सुझ शरण जिनाज्ञा धर्मनो। भवतरण भवतरण वरण शिव शर्मनो ॥ १४ ॥ वीस भेद संवर तणा। वली निर्जरा ना भेद बारहों ॥ जिन आणा २ जि० विषै ए सर्वही। कर्म रुकै कटै तेहथी ॥ आख्यो तेहिज धर्म उदारहो ॥ मु० ॥ १५ ॥ सूत्र धर्म प्रभु आखियो। वलि चारित्र धर्म उदार हो ॥ हलुकर्मी २ जीव तसु ओलखै। ए दोनूं ही जिन आज्ञा मझै ॥ तिणस्युं धर्म कहीजै सारहो ॥ मु० ॥ १६ ॥ संयमनें तप शोभता। वर संजम थी रुकै कर्म हो ॥ तप सेती २ बंधे अघ

॥ ६ ॥ यन्त्र घरटी ऊंखल । मूसल घाणी आदि ॥ कीधा नें कराव्या । ते निन्दु तज व्याधि ॥ ७ ॥ वलि कुटम्ब पोष्या । दियो कुपाते दान ॥ सहु साखे निन्दु । पाप हेतु पहिछान ॥ ८ ॥ इत्यादिक दुकृत । त्रिहुं जोगे करि कीध ॥ तेहनो करै निन्दा । ए छट्ठो द्वार प्रसिद्ध ।

॥ इति छट्ठो द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

दुकृत नी निन्दा कही, छट्ठा द्वार मझार ।
हवे सुकृत अनुमोदना, दाखूं सप्तम द्वार ॥ १ ॥

॥ ढाल ७ ॥

(प्रभवो मन में चितवै, सीता सती सुन जनमिया पदेशी)

ज्ञान दर्शण चारित तप भला । भव दधि मांझी जिहाज ॥ सम्यक् प्रकारे सेविया । ते अनुमोदुं आज ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध नें आयरिया । उवज्झाया अणगार ॥ तसु नमस्कार वंदना करी । ते अनुमोदुं सार ॥ २ ॥ सामायिकादिक जे भला । छउं आवश्यक सार उद्यम तेह विषे कियो । अनुमोदुं इहवार ॥ ३ ॥ सूत्र सझाय कीधी वली । ध्यायो वारू ध्यान ॥

पिण अन्य जन नहीं । इम करै विचारणारे ॥ भावे भावना ॥ १ ॥ पूरव कृत अघ जे । भोगवियां मुकाइंरे ॥ पिण वेद्यां विनां । नहीं छुटको थाइंरे ॥ भा० ॥ २ ॥ जे नरक विषे म्हैं । दुःख सह्यो अनंतोरे ॥ तो ए मनुष्य नो । किञ्चित दुःख हुंतोरे ॥ भा० ॥ ३ ॥ जे समकित बिण म्हैं । चारित्र नी किरियारे ॥ बार अनंत करी । पिण काज न सरिया रे ॥ भा० ॥ ४ ॥ हिव समकित चारित्र । दोनुं गुण पायोरे ॥ वेदन सम पणे । सह्यां लाभ सवायोरे ॥भा० ॥ ५ ॥ ओतो अल्प काल में । तूटे अघ जालोरे ॥ भगवती सूत्रमें । कह्यु परम कृपालोरे ॥ भा० ॥ ६ ॥ सूको त्रिण पूलो । जिम अग्नि विषेहो रे ॥ शीघ्र भस्म हुवे । तिम कर्म दहेहोरे ॥ भा० ॥ ७ ॥ जिम तप्त तवे जल । विंदु विललावेरे ॥ तिम दुःख समचित्ते सह्या । अघ चय थावेरे ॥ भा० ॥ ८ ॥ दुःख अल्प काल में । मुनि गजसुकमालो रे ॥ सम भावे करी । लही शिव पद्द शालोरे ॥ भा० ॥ ९ ॥ अति तीव्र वेदना । बहु वर्ष विचारोरे ॥ सही शिव संचर्या । चक्री सनतकुमारोरे ॥ भा० ॥ १० ॥ जिन कल्पिक साधु । लिये कष्ट उदीरोरे ॥ तो आव्यां उदय । किम थाय अधीरोरे ॥ भा० ॥ ११ ॥ सही चरम जिनेश्वर ।

में गृद्ध थावैरे ॥ तो अघ संचो हुवे । अधिको दुःख पावैरे ॥ भा० ॥ २३ ॥ नर इन्द सुरिन्दना । काम भोग कंटालारे ॥ तसु वांछा कियां । दुःख परम पयालारे ॥ भा०॥ २४ ॥ तिणसुं मुनि वेदन सहै । शिव-सुख कामीरे ॥ धर्म शुकल भलो । ध्यावे चित्त धामीरे ॥ भा० ॥ २५ ॥ बहु कर्म निर्जरा । तिण ऊपर दृष्टिरे ॥ राखे महामुनि । समता अति श्रेष्टीरे ॥भा०॥ २६ ॥ स्वजनादिक ऊपर । छांडे स्नेह पाशारे ॥ अति निर्मल चिते । शिवपुर नो आशारे ॥ भा०॥२७॥ संग स्त्रियादिक ना जाणै भुयग समाणारे ॥ समभावे रहै । मुनिवर महा स्याणारे ॥ भा० २८ ॥ क्रोधादिक टालो । सम भावन सारो रे ॥ दृढ़ चित्त करि धरै । ए अष्टम द्वारोरे ॥ भा० ॥ २९ ॥

॥ इति अष्टम द्वारम् ॥

॥ दोहा ॥

अष्टम द्वारे भावना, आखी अधिक उदार ।
नवमा द्वार विषे हिवे, अणसण नो अधिकार ॥१॥

सिद्ध ॥ ध० ॥९॥ तीसक मुनिवर नें भलो । मास संथारो न्हाल ॥ सामानिक थयो शक्र नो । अष्ट वर्ष चरण पाल ॥ ध० ॥ १० ॥ कुरुदत्त चरण छमास हो । अठम २ तप जाण ॥ संथारो अर्द्धमास नो । पाम्यो कल्प ईशान ॥ ध० ॥ ११ ॥ मदन संब महिमा निलो । वली अनिरुद्ध कुमार ॥ अधिक हर्ष अणसण करी । पोंहता मोक्ष मझार ॥ ध० ॥ १२ ॥ आठुं अग्रमहेषियां । कृष्ण तणी चरण धार ॥ अति तप करी अणसण ग्रही । पहुंती मोक्ष मझार ॥ ध० ॥ १३ ॥ नंदादिक तेरै वली । नृप श्रेणिक नो नार ॥ चरण ग्रही अणसण करी । पामी शिव सुख सार ॥ ध० ॥ १४ ॥ इत्यादिक मुनि महा सती । याद करे मन मांय ॥ भूख तृषादिक पीड़िया । दृढ़ चित्त अधिक सवाय ॥ ध० ॥१५॥ शूर चढे संग्राम में । तिम मुनि अणसण मांय ॥ कर्म रिपु हणवा भणी । शूरवीर अधिकाय ॥ ध० ॥ १६ ॥ जन्म मरण दुःख थी डर्या । शिव सुख बांछा सार ॥ ते अणसण मे सैंठा रहै । ए कह्युं नवमुं द्वार ॥ ध० ॥ १७ ॥

॥ इति नवम द्वारम् ॥

देवा। कियो कनक सिंघासण तनखेवा ॥ ऊपर चमर कुमर प्रति वैसारं ॥ इ० ॥ ८ ॥ नवकार मंत्र सेठ संभलायो। सुण जाप जप्यो तिण सुखदायो॥ लह्यो मावत सुर नो अवतारं ॥ इ० ॥ ९ ॥ वाल वछड़ा चरावतो जिह वारं। नदी पूर आयां गुण्यो नवकारं ॥ थई ततखिण सरिता दोय डारं ॥ इ० ॥ १० ॥ सेठ समुद्र में डूबंतो। नवकार गुण्यो धर चित्त शांतो ॥ सुर जिहाज उठाय म्हेली पारं ॥ इ० ॥ ११ ॥ तो चारित्र सहित जीको नाणी। पञ्च परमेष्टी ओलख जपे जाणी ॥ तो स्युं कहिये तसु फल सारं ॥ इ० ॥ १२॥ शुद्ध एकाग्र चित्त तन मन सेती। पार पुगावे निपजाई खेती ॥ ध्यान सुधारस दिल धारं ॥ इ० ॥ १३ ॥ ओ तो चरण अमोलक कर आयो। पद आराधक जे मुनि पायो ॥ करै सर्व दुखा रो छुटकारं ॥इ०॥ १४ ॥ मरणांत आराधनां इह रीतं। करै दश विधि तन मन धर प्रीतं ॥ ते संसार समुद्र तिरै पारं ॥इ०॥१५॥संवत उगणीसे वर्ष पणतीसं। रची जोड़ श्रावण विद छट्ठ दिवसं ॥ पायो शहर वीदासर सुखसारं ॥ इ० ॥१६॥ भिक्षु भारीमाल गणि ऋषिरायो। शुद्ध तास प्रसादे सुख पायो ॥ वाक जय जश सम्पति जयकारं ॥ इम ॥१७॥

॥ इति आराधनां री १० ढाल सम्पूर्णम् ॥

व्रती, वले आरंभी अणारंभी जाणो। ते व्रतां आश्री तो अणारंभी आर्य, ते मुक्तरो मारग निर्मल ठाणो॥ आ॥ ४॥ ए दोनूंई स्थानक जूजूवा छै, ते धर्म अधर्म दोयां मे तायो। साध श्रावक व्रत आश्री धर्म आर्य, असंजती अव्रत आश्री अधर्म मांयो॥ आ॥ ५॥ अधर्म पक्ष ने अनार्य कह्यो छै, पिण सम्यक्त निर्जरा अधर्म नांही। ज्यूं श्रावक ने धर्म आर्य कह्यो छै, पिण अव्रत नहीं धर्म आर्य मांही॥ आ॥ ६॥ जिन आज्ञा लोपी आप रै छांदे चालै, तिण ने ज्ञान-रहित कह्यो भगवंत। आचारांग दूजा अध्ययन रै छट्ठे उदेशै, तो आज्ञा बारै धर्म कहै नहीं संत॥ आ॥ ७॥ केवली आचर्यो ते छद्मसत आचरै, केवली अणाचर्यो ते आचरै नाहीं, आचारांग दूजा अध्येन रै छट्ठै उदेशै, ए दोयां रो एक आचार छै ताही॥ आ॥ ८॥ वीर कह्यो आज्ञा माहिलो धर्म मांहरो, आज्ञा बारै बोल बोलवो युक्तो नांही। ए उतकष्टी चरचा कही आचारंगे, छट्ठे अध्येन दूजा उदेशा माहीं॥आ॥९॥ प्राण भूत जीव ने दुख नहीं देणो, ए तीन काल रा तीर्थंकर नी वाणो। ए सुध धर्म आचारंग चौथे, पहिला उदेशा सूं लीज्यो पिछाणी॥ आ॥ १०॥ प्रमादी द्रव्यलिंगी पासत्यादिक, सगला छै जिणआज्ञा बारै। चौथे

आचारंग पांचमांध्येन रे छठे उदेशै, तो जिन आज्ञा ने लीजो आराध ॥ आ ॥ १८ ॥ उन्मार्ग खोटो सर्वथा छांडूं, मुक्ति मारग ने करूं अंगीकारो। चौथा अध्येन आवसग रे मांही, साधां छोड्यो ते जिण आज्ञा बारो ॥ आ ॥ १९ ॥ ठाणा अंग सूत्र रे नवमे ठाणे, नव प्रकारे पुन्य समचे बतायो। पिण असंजती ने दीधां पुन्य नांही, तिणरो थे न्याय सुणो चित्तलायो ॥ आ ॥ २० ॥ असंजती ने निरदोषण दीधां, एकांत पाप भगवती रे मांह्यो। आठमां शतक रे छठे उदेशे, पुन्य कहै ते तो मूसावायो ॥ आ ॥ २१ ॥ अन्यतीर्थी ने च्यार आहार देवारा, आणन्दजी सूंस किया जिन आगे। उपासकदशा रे पहिले अध्येने, तो तिण ने दीधां पुन्य किसो पर लागे ॥ आ ॥ २२ ॥ पात्र ने देवे कुपात्र ने देवै, ए चौभंगी कही ठाणाअङ्ग मांय। चौथे ठाणे कुपात्र कुक्षेत्र कह्या छै, तिण ने पोष्यां सूं पुन्य किसो पर थाय ॥ आ ॥ २३ ॥ अन्यतीर्थी गृहस्त ने देवो छोड्यो, ते संसार भमवा नो हेतु जाणो। सूयगडा अंग ने नवमाध्येन, तेवीसमी गाथा वीर वखाणी ॥ आ ॥ २४ ॥ उत्तराध्येन चवदमारी बारमी गाथा, भृगु प्रोहित ने बेटा बोल्या विमासी। विप्र जीमायां तमतमा जावै, तो पुन्य कहै ते घणो दुःख पासी ॥

कीधा, तिण ने चोर कह्यो छै दशमा अंगे। तिणने अन पाणी देवै ते पिण चोर. तीजै अध्येन जोवो मन-रंगे ॥ आ ॥ ३३ ॥ सचित खवायां उत्कृष्टे भांगे, च्यार चोरी ठाणाअंग अर्थ मांय। तो वीर नी आज्ञा विण सरव चोरी छै, पहिले ठाणा में भाख्यो जिनराय ॥ आ ॥ ३४ ॥ लौकिक रो दान माठो जाणी छोडवो, निरवद्य दान परूपणो सार। आचारंग छठाध्येन रे पांचमै उदेशे, वर्तमान मौन साझै अणगार ॥ आ ॥ ३५ ॥ देता लेता इसो वर्तमान देखी, साधु ने सूत्र कही तिण कालो। सूगडाअंग इकवीसमेध्येन, छत्तीसमी गाथा जोय संभालो ॥ आ० ॥ ३६ ॥ सावद्य दान प्रसंश्या छःकाय री हिंसा, वर्त्तमानकाल निषेध्यां अंतराय। सूयगड़ाअंग रै इग्यारमाध्येने,वीसमी गाथा भाखी जिनराय ॥ आ० ॥ ३७ ॥ ठाणा अंगसूत्र रे दशमै ठाणे, दश शास्त्रां में अब्रत शस्त्र जाणो। ते शस्त्र तीखो कियां पुन्य परूपै, त्यांने पुन्य धर्म री नही छे पिछाणे ॥ आ ॥ ३८ ॥ कर्मां ने मुकावा ने जीव हणे ते, नरक तणा फल पामै विशेष। तो धर्म हेते जीव हणे तो, आचारंग दूजाध्येन रे दूजे उदेश ॥ आ ॥ ३९ ॥ जन्म मरण मुकावाने जीव हणे तो, समकित जावे ने आवे मिथ्यात। आचारंग पहिला

देखी ने पूछ्यो, इण कवण दियो कुपात्र दान । विपाक्न रे पहिले अध्येन गौतम पूछ्यो, तिणरा सांप्रत फल भोगवे छे अज्ञान ॥ आ० ॥ ४८ ॥ धर्म ना अवगुण अधर्म ना गुण बोले, निशीथ इग्यारमें दंड चौमासौ। आज्ञा मांहि पाप आज्ञा बारै धर्म कहै ते, चिहुं गति माहिं घणो दुख पासी ॥ आ० ॥ ४९ ॥ जिण आज्ञा मिलै तिम तिम धर्म कहणो, सूयगडाअंग रे चवदमा मांय । सतावीसमी गाथा श्री जिण भाषी, आज्ञा बारै धर्म न कहै मुनिराय ॥ आ० ॥ ५० ॥ बारै व्रत आदर्या ते पहिलो विसरामो, १ सामाई २ पोसो ३ ने करै संथारो ४ ए च्यार विश्रामां ठाणा अंग चौथे, पिण आज्ञा विण धर्म नही छे लिगार ॥ आ० ॥ ५१ ॥ तीन चाल्या श्रावक रा मनोरथ, ठाणा अंग सूत्र रे तीजे ठाणे । परिग्रह छाड री भावना भावे, पिण धन दीधां मे पुन्य अज्ञानी ताणे ॥ आ० ॥ ५२ ॥ दश दान कह्या ठाणा अंग दशमे, दश धर्म कह्या तिणरी कीजे पिछाण । दश स्थविर कह्या ते पिण ओलख लेणा, यांनें न्यारा न्यारा ओलखे बुद्धिवान ॥ आ० ॥ ५३ ॥ हिंस्या करी जाणी ने झूठ बोलै, साधु ने असणादिक अशुद्ध बहिरावे । भगवती पांचमें शतक रे छठे उद्देशे, जिण कह्यो अल्प आउखो बंधावे ॥ आ० ॥ ५४ ॥ अफासु

देखी ने पूछ्यो, इण कारण दियो कुपात्र दान। विपाक रे पहिले अध्येन गौतम पूछ्यो, तिणरा सांप्रत फल भोगवे छै अज्ञान ॥ आ० ॥ ४८ ॥ धर्म ना अवगुण अधर्म ना गुण बोले, निशीथ इग्यारमें दंड चौमासो। आज्ञा मांहि पाप आज्ञा बारे धर्म कहै ते, चिहुं गति मांहिं घणो दुख पासो ॥ आ० ॥ ४९ ॥ जिण आज्ञा मिले तिम तिम धर्म कहणो, सूयगडाअंग रे चवदमा मांय। सतावीसमी गाथा श्री जिण भाषी, आज्ञा बारे धर्म न कहै मुनिराय ॥ आ० ॥ ५० ॥ बारे व्रत आदर्या ते पहिलो विसरामो, १ सामाई २ पोसो ३ ने बारे संथारो ४ ए च्यार विश्रामां ठाणा अंग चौथे, पिण आज्ञा विण धर्म नहीं छै लिगार ॥ आ० ॥ ५१ ॥ तीन चाल्या श्रावक रा मनोरथ, ठाणा अंग सूत्र रे तीजे ठाणे। परिग्रह छांड री भावना भावे, पिण धन दीधां मे पुन्य अज्ञानी ताणे ॥ आ० ॥ ५२ ॥ दश दान कह्या ठाणा अंग दशमें, दश धर्म कह्या तिणरी कीजे पिछाण। दश स्थविर कह्या ते पिण ओलख लेणा, यांनें न्यारा न्यारा ओलखे बुद्धिवान ॥ आ० ॥ ५३ ॥ हिंसा करी जाणी ने झूठ बोले, साधु ने असणादिक अशुद्ध वहिरावे। भगवती पांचमे शतक रे छठे उद्देशे, जिण कह्यो अल्प आउखो बंधावे ॥ आ० ॥ ५४ ॥ अफासु

दोहा।

हिवे निर्वद्य करणी ओलखायवा, संक्षेप कहूं विस्तार।
ते करणी करतां पुन्य नीपजे, पिण सावद्य सूं नही पुन्य लिगार॥१॥
जिण आगन्यां माहिली करणी करै, शुभ जोग वर्तै तिणवार।
तिहां कर्म कटै पुन्य नीपजै, देखो सिद्धांत मझार॥ २॥
केई अज्ञानी इम कहै, आज्ञा बारली करणी सूं पुन्य।
त्यांने खबर नहीं जिण धर्मनी, त्यांरी जाबक बात जबून्य॥ ३॥
शुभ कर्म बंधै जीवरे, ते आज्ञा माहिली करणी सू जाण।
ठाम ठाम सिद्धांत में जिण कह्यो, ते सुणज्यो सुमता आण॥४॥

॥ ढाल २ जी ॥

भवियण जिण आज्ञा सुखकारी ॥ ए देशी ॥

साधु ने सूझता च्यारूं आहार बहिरावै, तो एकंत निर्जरा जाण। भगवती आठमें शतक छठे उदेशै, शुद्ध निर्वद्य करणी पिछाण रे॥ भवियण जोवो रे हृदय विचारी॥ या निरवद्य करणी सुखकारी रे भवियण, तिण सूं पामे भवपारी॥ १॥ हिंस्या झूठ दोनूं न सेवै, साधां ने शुद्ध आहार बहिरावै। भगवती पांचमें शतक छट्ठे उदेशै, दीर्घ आउखो बंधावै रे॥ भवि॥ २॥ वले साधां ने वंदणा नमस्कार करी ने, मनोगम शुद्ध आहार बहिरावे। भगवती पांचमें शतक छठे उदेशै, शुभ लांबो आउखो बंधावे रे॥ भवि॥ ३॥ वंदणा कर नीच गोत खपावे, ऊंच गोत कर्म बंधायो।

। भवि ॥ ११ ॥ गृहस्थ री व्यावच करै करावै, करै तिण ने भलो जाणै तायो । निशीथ रे इग्यारमें उद्देशै, चौमासो प्रायश्चित आयोरे ॥ भवि ॥ १२ ॥ तिणने भलो जाणै तो ही डंड कह्यो छै, तो पुन्य कहै किण न्याय । ए सावद्य काम संसार नो मारग, तिण में श्री जिण आज्ञा नांयरे ॥ भवि ॥ १३ ॥ वली सातमा शतक रे दशमें उद्देशे, अठारै पाप सेव्या सूं पाप । अठारै पाप न सेव्या सूं पुन्य बंधे, श्री कह्यो जिणेश्वर आप रे ॥ भवि ॥ १४ ॥ ठाणाअंग रे दशमे ठाणै, दश बोल थकी पुन्य बंधै, त्यां दशांई बोलां री श्री जिण आज्ञा, इम भाख्यो वीर जिणंद रे ॥ भवि ॥ १५ ॥ भगवती सातमे शतक रे छठे उद्देशै, अठारै पाप न सेवै कोय। तिण रे अकरकश वेदनी कर्म बंधे छै, सेव्यां करकश वेदनी होय रे ॥ भवि ॥ १६ ॥ तीर्थंकर नाम कर्म बधै बीस बोलां, ज्ञाता आठमाध्येन माह्यो। ते महाबल अणगार सेव्या छै, तिण सूँ थया तीर्थंकर ताह्यो रे ॥ भवि ॥ १७ ॥ तिण मे सतरमो बोल समाहिय भाख्यो, इण बोल ने लीजो आराध। गुरुरो कार्य करी समाधि उपजावे, वले ज्ञानादि भाव समाध रे ॥ भवि ॥ १८॥ कोई कहै सगला जीवां ने, द्रव्य साता उपजावै। श्रावक ने असणादिक खवावे, तो तीर्थंक-

कह्यो बंध। भगवती सातमें शतक रे छठे उदेशे, इणरी पिण आज्ञा देवे जिणंदरे ॥ भवि ॥ २७ ॥ भगवती आठमें शतक रे नवमें उदेशे, आठ कर्म बंधण रो न्याय। तिणमें आठांई पाप कर्म री करणी, माठी कही जिनराय रे ॥ भवि ॥ २८ ॥ वेदनी आउखो नाम गोत ए च्यारूं, शुभ कर्म लगै शुद्ध करणी। निरवद्य ने आज्ञा मांहे कही छै, तिण सूं जीवने आदरणी रे ॥ भवि ॥ २९ ॥ कोई कहै साधु आहार करै नींद लेवै, वले भोगवै उपधि अनेक। त्यांने आज्ञा छै तोहि पाप बंधै छै, इम बोलै ते बिना विवेक रे ॥ भवि ॥ ३० ॥ कोई कहै पञ्च प्रमाद कह्या छै, निद्रा लेवै ते प्रमाद मांय। इम कही आज्ञा मांहिं पाप थापै छै, तिणरो जाब सुणो चितलाय रे ॥ भवि ॥ ३१ ॥ निद्रा प्रमाद मांहिं ते तो भाव निद्रा, द्रव्य निद्रा प्रमाद नांय। मिथ्यात अज्ञान रूप मोह कर्म उदा सूं, भाव निद्रा कही जिणराय रे ॥ भवि ॥ ३२ ॥ आचारङ्ग तीजाध्येन रे पहिले उदेशै, द्रव्य भाव निद्रा कही दोय। मिथ्यादृष्टि भाव निद्रा मे सूता, साधु सदा जागता सोयरे ॥ भवि ॥ ३३ ॥ द्रव्य निद्रा दर्शणावर्णी कर्म उदै सूं, तिण सूं पाप न बधै कोय। पाप बंधै एक मोह कर्म उदै सूं, अवरां सूं पाप न होय रे ॥ भवि ॥

भाखो। सुध लेवै देवै ते सुध गति जावै, ते दशवैं-कालिक साखी रे॥ भवि॥ ४२॥ भगवती पहिले शतक रे नवमें उदेशै, आहार करतां तोड़े सात कर्म। वलि कह्यो सातमा शतक रे पहिले उदेशै, आहार करै चलावाने धर्म रे॥ भवि॥ ४३॥ साधु आहार करै संजम याता निभावा, वले करणो कह्यो ठंढो आहार। उत्तराध्येने रे आठमें भाख्यो, इग्यारमी बारमी गाथा सार रे॥ भवि॥ ४४॥ मूर्छा रहित संजम याता निभावा, साधु ने करणो आहार। उत्तरा-ध्येन पैंतीसमें सतरमी गाथा, पिण प्रमाद न कह्यो लिगार रे॥ भवि॥ ४५॥ आचारंग तीजा ध्येन रे दूजे उदेशै, संजम पालवा करणो आहार। प्रमाद सूं तो संजम याता विणासे छै, वले हुवे संजम रो बिगार रे॥ भवि॥ ४६॥ ठाणाअंग रे नवमें ठाणे, पहिला छेहला तीर्थंकर रो धर्म। मानोपेत उपधि ने पांच महाव्रत, तिण सूँ लागे नहीं पाप कर्म रे॥ भवि॥ ४७॥ साधु नें परिग्रह रहित कह्यो छै, धर्म उपधि ने परिग्रह कह्यो नाहीं। दशमा अंग रे दशमें अध्येने, पिण पाप नहीं तिण माहीं रे॥ भवि॥ ४८॥ राग-द्वेष रहित उपधि भोगवै,तिण ने परिग्रह कह्यो नाहीं। दशमाअंग रे दशमेध्येने, परिग्रह कहै ते मूरख माहीं

कह्यो छै, पिण नहीं सावद्य माहीं रे ॥ भवि ॥ ५७ ॥ प्रमाद रा फल तो कडुवा कह्या छै, प्रमाद में जिन-आज्ञा नांय । वली केवल ज्ञानी पिण आहार करै छै, ते तो अप्रमादी जिनराय रे ॥ भवि ॥ ५८ ॥ संजम रो गुण तो कर्म रोकवा रो, तपस्या सूं कर्म तोड़ा पाय । उत्तराध्येने गुणतीस में आख्यो, सतावीसमा बोल मझार रे ॥ भवि ॥ ५९ ॥ उपधि तणा पचखाण कियां सूं सझाय नो पलिमंथ न थाय । उत्तराध्येन गुणतीस में ध्येने, चौतीसमां बोल मांय रे ॥ भवि ॥ ६० ॥ उपधि पड़िलेहतां सझायनो पलिमंथ, तिणसूं पाप न लागे कोय । पडिलेहणा करे जब पडिलेहणा रो धर्म, सझाय रो धर्म न होय रे ॥ भवि ॥ ६१ ॥ ज्यूं आहार करे ते प्रमाद तपस्या रो, तिण सूं पाप न लागे कोय। आहार करे तिण वेलां धर्म आहार रो,पिण तपस्या रो धर्म न होय रे ॥ भवि ॥ ६२ ॥ पडिलेहणा करे ते सझाय नो पलिमंथ, पिण तिण ने सावद्य कहिजे नाही। पलिमंथ रो नाम सुणी ने, न थापणो सावद्य माहीं रे ॥ भवि ॥ ६३ ॥ ज्यूं आहार करै ते तो प्रमाद तपरो, पिण सावद्य नहीं छै लिगार । तपस्या तणो प्रमाद सुणी ने बोलणो नहीं विना विचार रे ॥ भवि ॥ ६४ ॥ ठाणायंग रे पांचमें ठाणे, पांच अचेल कह्या अरिहन्त

कह्यो जिनराय के। झीणो ज्ञान जिनराज नो ॥ १॥ सिंह बाघ हिंसक जीव देखने, मार न कहिणो तिण सूं द्वेष आण के। मत मार न कहिणो राग आणने, सूयगडाअंग एकवीसमें पिछाण के॥ २॥ दश वांछा करवी नहीं, दशमें ठाणे ठाणाअंग मांय के। तिणमें जीवणो मरणो न वांछणो, तो पारको किम वांछे मुनिराय के॥ ३॥ बाल अज्ञानी वांछे घणो जीवणो, ते पंडित नहीं वांछे ताम के। आचारंगध्येने पांचमें, पहिले उदेशे प्रभु कह्यो आम के॥ ४॥ दशमें अध्येन सूयगडाअंग में, चौवीसमी गाथा रे मांय के। साधु जीवणो मरणो वांछे नहीं, ते असंजम जीतव्य बाल मरण छे ताय के॥५॥ सूयगडाअंग रे तेरमें, वीसमी गाथा में विस्तार के। जीवणो मरणो न वांछे साधजी ए पिण असंजम जीतव्य धार के॥६॥ असंजम जीतव्य उपरांठो करे, तिणने आदर नहीं देवे अणगार के। सूयगडाअंग रे पनरमें, दशमी गाथा रो करो विचार के॥ ७॥ असंजम जीतव्य नहीं वांछणो, बाल मरण न वांछे धीर के। सूयगडाअंगध्येने तीसरे, दूजे उदेशे कह्यो महावीर के॥ ८॥ बाल अज्ञानी जीवड़ा, असंजम जीतव्य ना अर्थी जाण के। सूयगडाअंग रे पांचमे, पहिले उदेशे तीजी गाथा पिछाण के॥ ९॥ साधु

सी, तावडो, कलह, उपद्रव रहित सुकाल कौ । ए साधु ने नहीं वांछणा, दशवैकालिक सातमें संभाल कौ ॥ जी ॥ १८ ॥ ॥ कोई भेषधारी इसड़ो कहे, म्हे ऊंदरा ने बचावां मिनकी ने न्हसाय कौ । तो उपद्रव रहित नहीं वांछणो, तो उपद्रव सहित किम करणो जाय कौ ॥जी॥१९॥ दूजे आचारंग ध्येन दूसरे, पहिले उद्देशे गृहस्थ लड़े मांहों मांय कौ । तो मार मतमार कहिणो नहीं, राग द्वेष करणो नहीं ताय कौ ॥ जी ॥ २० ॥ दूजे आचारंगध्येन दूसरे, पहिले उद्देशे गृहस्थ हणे तेऊकाय कौ । तो अग्नि लगावा रो कहिणो नहीं, बुझावा रो पिण न कहे मुनिराय कौ ॥जी॥ २१ ॥ सूयगड़ाअंग श्रुतखंध दूसरे, छठे अध्येने कह्यो आर्द्रकुमार कौ । वीर धर्म कहे कर्म काटवा, वलि घनेरा ना तारण हार कौ ॥ २२ ॥ उपदेश देई समझावणो, आ पेला री अणुकंपा जाण कौ । चौथे ठाणेठाणाअंग में, ए चउभंगी लीज्यो पिछाण कौ । ॥ २३ ॥ हरणगवेषी देवता, देवकी रा पुत्रां ने म्हेल्या आण कौ । सुलसांरी अणुकंपा आणनें, अंतगढ़ सूत्र में जिन वाण कौ ॥ २४ ॥ ईंट उपाड़ी कृष्ण जी, तिण पुरुष तणी अणुकंपा आण कौ । अंत गढ़ सूत्र माहिं कह्यो, ए पिण सावद्य माहिं जाण कौ ॥

भगवती मांह कै ॥ ३३ ॥ ए सावज्ज अणुकंपा कही, तिणरी आज्ञा नही दे जिनराय कै। हिवे निरवद्य अणुकंपा कहूं, ते सांभलज्यो भवियण चित्तल्याय कै ॥ ३४ ॥ सुसला प्राण भूत जीव नी, हाथी अणुकंपा कार कियो प्रत ससार कै। ज्ञाता रा पहिला अध्येन में, ते मरने हुवो छै मेघकुमार कै ॥ ३५ ॥ चित्त कह्यो केशी स्वाम ने, आप धर्म कहो तो प्रदेशी रे गुण थाय कै। घणा दोपद चौपद पशुपंखियां भणी, राय प्रसेणी उपंग रे माह कै ॥ ३६ ॥ कोई कहै गुण जीवां तणो, पिण जीवांरे तो भाव गुण नहीं थाय कै। भाव गुण तो न जीवां तणो, इण द्रव्य गुण सूं तो मोक्ष नही जाय कै ॥ जी ॥ ३७ ॥ नमोथुणं कह्यो आवसग सक्षे, तिण में कह्यो संजम जीतव्य ना दातार कै। पिण असंजम जीतव्य कह्यो नही, असंजम में नहीं धर्म लिगार कै॥ जी ॥३८॥ समदपाल चोरने देखने, संजम लीधो वैराग मन आण कै। उत्तराध्येन रे इकवीस में, पिण ग्रथ देई न छोडायो जाण कै ॥ जी ॥ ३९ ॥ गृहस्थ मारग भूलो उजाड़ में, तिणने जो मारग बतावे मुनि-राय कै। निशीथ उदेशे तेरसे, चौमासी डंड कह्यो जिनराय कै ॥ ४० ॥ भगवती शतक सात में, दश में उदेशे कह्यो दीन दयाल कै। घणो आरंभ अग्नि

रैहलाणा सम्भार के । समत् अठारा असीये, वैशाख विद तीज शुक्रवार के ॥ ४८ ॥

दोहा ।

नव तत्व ओलख्यां, विना, सम्यक्त आवै नांय ।
ठाम ठांम सिद्धात में जिनकह्यो, ते सुणज्यो चित्तलाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ४ थीं ॥

(देशी—पाखण्ड वधसी आरे पचमे रे)

च्यार सच कह्या ठाणाअंग सूत्रमे रे, ते च्यारूं ही गुणरतारी खाण रे । त्यांरा गुण ओलख ने निरणाय करोरे, साचो सरध्यां सूं सम्यक्त जाण रे ॥ नव तत्व ओलखियां विन समकित नहीं रे ॥ १ ॥ तीजे ठाणे ठाणा अंग सूत्र मे रे, पहिला ते भणवो नव तत्व ज्ञान रे । तपस्या ने ध्यान दोनूं भणियां पछे रे, भणियां विण निरफल तपस्या ध्यान रे ॥ २ ॥ उत्तराध्ययन अध्ययन अठावीसमे रे, नव तत्व जाण्यां विण सम्यक्त नांय रे । भावे करी सरध्यां सूं समकिती हुवे रे, पनरमी गाथा कही जिनराय रे ॥ ३ ॥ ज्ञान पहलो ने दया पाछे कही रे, दशवेकालिक रे चौथे जाण रे । दशमी गाथा देखो दिल खोलने रे, ज्ञान विन सम्यक्त नही पिछाण रे ॥ ४ ॥ जीव अजीव दोनूं ही जाणे

आवे ते कर्म छे रे, यां दोयां ने बुद्धिवन्त सरधो न्यार रे ॥ २७ ॥ उत्तराध्येन अध्येन गुणतीसमे रे, पचखाण सूं आस्रवद्वार रुंधाय रे। वली उत्तराध्येन गुणतीसमें रे, व्रतांरा छिद्र कह्या आस्रवद्वार रे। तिणद्वार माहें आवे ते कर्म छे रे, यां दोयांने बुद्धिवन्त सरधो न्यार रे ॥ २७ ॥ उत्तराध्ययन अध्ययन गुणतीसमें रे, पचखाण सूं आस्रवद्वार रुंधाय रे। वली उत्तराध्ययन गुणतीसमांध्ययनमें रे, अप्रशस्तद्वार आस्रव कह्यो ताय रे ॥ २८ ॥ उत्तराध्ययन अध्ययन तीसमें रे, आस्रव रूपीया नाला सोय रे। वली उत्तराध्ययन अध्ययन चौतीसमें रे, कृष्ण लेश्यारा लक्षण आस्रव जोय रे ॥ २९ ॥ भाव लेश्याने तो कहै जीव छे रे, तो त्यांरा लक्षण किम हुवे अजीव रे। त्यां जीव अजीव दोनूं नहीं ओलख्या रे, त्यांरे मोटी मिथ्यात तणी छे नींव रे ॥ ३० ॥ छः भाव लेश्या संज्ञा दर्शण दिष्टने रे, यां ने अरूपी कह्या भगवती मांय रे। बारमे शतक उदेशे पांचमें रे, कोई बुद्धिवन्त जोय विचारो न्याय रे ॥ ३१ ॥ प्राणातिपातमे वर्ते तेहने रे, भगवतीमें जीव कह्यो जगनाथ रे। सातमें शतक उदेशे दूसरे रे, तिणने अजीव कहै ते जड़ मिथ्यात रे ॥ ३२ ॥ प्राणातिपात वेरमण तेहने रे, भगवतीमें

कल्पै साधु भणी, साधां काने नहीं कीधा रे॥ ए मारग छै साधु रो ॥ ७॥ दूजे श्रुतखंध आचारंग अध्येन. दूसरै, छट्ठे उदेशे तायो रे। एक काय हण्यां हिंसा छः कायरी, एक व्रत भांगां छहुं जायो रे ॥८॥ अठारा ठाणा मांहिलो, एक सेव्यां सूं भिष्ट थायो रे। दशवे-कालिक छट्ठा ध्येन मे, सातमी गाथा मांयो रे ॥ ९ ॥ आचारंग रे आठ में, पहिले उदेशे मांयो रे। अकल्प तो लेवै तेहने, चोर कह्यो जिनरायो रे ॥ १० ॥ पूती-क्रम नो अंश भोगवे, तिणने कह्यो ग्रहस्थ भेषधारी रे। पहिला अध्येन सूयगड़ा अंग में, तीजा उदेशा मझा-रीरे ॥ ११ ॥ कारण अशुद्ध लेणो कहै, तिणने कह्यो वहुल संसारी रे। आचारंग छट्ठा ध्येनमें, चौथे उदेशे विस्तारी रे ॥ १२ ॥ शरीर छांडै धर्म कारणे, पिण आधाक्रम्यादि लेणो नाही रे। आचारंग छट्ठा ध्येन मे, चौथा उदेशा मांही रे ॥ १३ ॥ पांचमा आरा रो नाम ले, दोष लगावे ते दुःख पासी रे। आचारंग छट्ठा ध्येन मे, जोवो चौथो उदेशो विमासी रे ॥ १४ ॥ क्रय विक्रय में वर्ते तेहने, कह्यो साधां तणो पांत वारो रे। उत्तराध्येन पैंतीसमे, देखो करो निस्तारो रे ॥१५॥ अचित वस्तु मोल लिरावियां. चौमासी दण्ड पिछा-णोरे। निशीथ उदेशे उगणीसमे, तिणने निश्चेई

गाढ कारण पडियां थकां, पहिला पहोर रो आण्यो आहारो रे। छेहले पहोर भोगवणो कह्यो, वृहत्कल्प मझारो रे ॥ २५ ॥ चौमासी प्रायश्चित वालो कारण पड्यां, लियां दोष नहीं एमोरे। ते मासिक दण्ड नितपिण्ड तणो, ते कारण पड्यां लियां दोष कीमो रे ॥ २६ ॥ वले मास कल्प रहिणो शेषे कालमें, पिण कारण पड्यां दोष नांही रे। ज्यूं कारण पड्यां नित-पिण्ड लीये, तिण रो दोष नहीं दिसै काई रे ॥ २७ ॥ ए तो वर्ज्यो ढीला पड़ता जाणने, तिणसूं कारण पड्यां दोष न कोयोरे, आधाकर्म्यादिक कारण पड्यां, लेणो नहीं छै सोयोरे ॥ २८ ॥ ग्रहस्थ ने साता पूछियां, दशवैकालिक में अणाचारो रे। तीजे अध्येन गाथा तीसरी, तो साता वंछ्यां न धर्म लिगारो रे॥ २९ ॥ ग्रहस्थरी वियावच कियां, अठावीसमो अणाचारो रे। दशवैकालिक रे तीसरै, छट्ठी गाथामे न्याय विचारो रे ॥ ३० ॥ ग्रहस्थने साधु कहै नहीं, आव जाव बैस कर कामो रे। दशवैकालिक सात मे, सेतालीसमी गाथा में तामोरे ॥ ३१ ॥ ज्ञान दर्शण चारित्र सहित छै, तिणने साधु कह्यो जिनरायो रे। ते पिण थोड़ा लोकमे, दशवैकालिक सातमां मांयो रे ॥ ३२ ॥ पहिले उदेशे वृहत्कल्प में. साधु ने रहिणो उघाड़े द्वारो रे।

पहिला ध्ययनमें, पांचमे उद्देशे पिछाणो रे। कांटांरी डालो अलगी करी, आज्ञा मांग गृहस्थ घर जाणो रे ॥ ४२ ॥ साधु रहै तिहां श्रावक भणी, आधी आखी रात वसावै रे। निशीथ उद्देशे आठमे, चौमासी प्रायश्चित आवे रे ॥ ४३ ॥ जोरीदावे रहतां ने वरजे नहीं, तो पिण चौमासी प्रायश्चित पावे रे। तीजो प्रायश्चित जोरी दावे रह्यां, तिण साथे बारे जावे पाछो आवै रे। ॥ ४४ ॥ प्रमाण अधिको उपगरण धरै, तो चौमासी दण्ड पिछाणो रे। निशीथ उद्देशै सोलमे, गुणचालीसमो बोल जाणो रे ॥ ४५ ॥ शंख दांत नहीं राखणो, काच मणि पाषाणो रे। प्रश्न व्याकरण दशमे कह्यो, चशमो राखै ते मूढ़ अयाणो रे ॥ ४६ ॥ थोड़ोई उपधि पड़िलेहै नहीं, तो मासिक प्रायश्चित आयो रे। दूजे उद्देशै निशीथ मे, छेहलो बोल कह्यो जिनरायो रे ॥४७॥ छती शक्ति कल्प स्यूं अधिका रहै, तो मासिक दण्ड विचारो रे। दूजा उद्देशा माहें कह्यो, सैंतीसमो बोल सारो रे ॥ ४८ ॥ दूजे श्रुतखन्ध आचाराङ्ग दूसरे, दूजै उद्देशे कह्यो भगवन्तो रे। तो कल्प लोपी ने अधिको रहै, क्रिया लागै काला दूकंतो रे ॥ ४९ ॥ ऋतु बन्ध ग्रह्या पाट पाटला, ऋतु बन्ध जो देवै नाहीं रे। मासिक दण्ड निशीथ मे, दूजा उदेशे माही रे ॥

भेदन शोग । सूयगडाअंग अठारमें आख्यो, वाल्हांरो पड़सी विजोग रे ॥ कु० ॥ २ ॥ आचारंगरे चौथे अध्येन, दूजे उदेशे प्रमाणो । धर्म हेत हण्यां दोष नहीं छे, आ अनारजरी वाणोरे ॥ कु० ॥ ३ ॥ आचारंगरे चौथे अध्येन, दूजे उदेशे जाणो । धर्म हेत कोई जीव नही हणनो, यो आरज वचन प्रमाणोरे ॥ कु० ॥ ४ ॥ जीव हणे जन्म मरण मुकायवा, पामे अहित अवोध । आचारंगरे पहले अध्येन, पहले उदेशे शोधरे ॥ कु० ॥५॥ आचारंग रे चौथे अध्येन, पहलो उदेशो पिछाणो । धर्म हेत जीव नहीं हणनो, तीन काल जिन वाणोरे ॥ कु० ॥ ६ ॥ प्रश्न व्याकरणरे पांचमें अध्येन, प्रतिमा परिग्रह में चाली । परिग्रह सेवी धर्म कहीने, कुमति हिये कांई घालीरे ॥ कु० ॥ ७ ॥ तीन मनोरथ श्रावक ना चाल्या, ठाणांग तीजे ठाणे । आरम्भ परिग्रह छोडण री भावना, ते सेव्यां धर्म किम जाणेरे ॥ कु० ॥ ८ ॥ दशवैकालिक धर्म अहिंसा, दया ज्ञान रो सारो । सूयगडांग पहले अध्ययन, चौथे उदेशे सम्भारो ॥ कु० ॥ ९ ॥ अठाइसमे उतराध्ययन में, मोक्ष नो मारग अमोल । थे देवगुरु धर्म मोलरा थापो, आहिज मोटो पोलरे ॥ कु० ॥ १० ॥ धर्म ठिकाणे जीव हणो तो, दया किसो ठौड़ पालो । कुगुरां ना

द्रौपदी प्रतिमा पूजी, एक थयां सम्यक्त पाई। गन्ध हस्त आचारज कह्यो छे, ओघनिर्युक्ति वृत्ति माई रे ॥ कु० ॥२०॥ अभवी संगमादिक प्रतिमा पूजे, तेहिज प्रतिमा सूर्याभ पूजे ते जीतव्यवहार लौकिक रीत छे, ओघ निर्युक्ति वृत्ति न सूझै रे ॥ कु० ॥ २१ ॥ भगवन्त ने वंदतां तथा दीक्षा लेतां, कह्यो पेच्चा हियाए सुहाए ताय। तथा परलोक हियाए सुहाए, राय प्रसेणी भगवती मां रे ॥ कु० ॥ २२ ॥ प्रतिमा पूज तथा लाय सूं धन काढतां, कह्यो पच्छा हियाए सुहाय। राय प्रसेणी भगवती माहि, तिहां पेच्चा पाठ कह्यो नहीरे ॥ कु० ॥ ॥ २३ ॥ प्रतिमा पूजे लाय सूं धन काढे, तिहां पेच्चा हियाए नहीं कांही। भगवन्त ने वान्दतां दीक्षा लेतां, किहांई पच्छा पाठ छे नाहीं रे ॥ कु० ॥ २४ ॥ पच्छा हियाए ते इणभव मांही, लौकिक खाते मंगलीक। पेच्चा हियाए ते परभव मांही, लोकोत्तर खातो तह-तीकरे ॥ कु० ॥ २५ ॥ कोई कहै जिन प्रतिमा पूजे, तेतो निसेस्साय पाठ मोक्ष जाणो। तो खन्धक ने अधिकारे लाय सूं धन काढ़े, त्यां पिण निसेस्साय पाठ पिछाणोरे ॥ कु० ॥ २६ ॥ पच्छा पाठ लारे निसे-स्साय कह्यो छे, ते इण भव मांहे द्रव्य मोक्ष जोय। लाय थकी धन बारे काढ्यां, दरिद्र ते मुकावो होयरे

शास्त्र में कह्यो छै, कुलथा मास ना भेद उदाररे ॥
॥ कु० ॥ ३५ ब्राह्मण रा मत महावीर न माने, पिण
त्यांरै मतरी साख दिखाई। ज्यूं थाने प्रकरण री
पिण साख बताई, भव जीव समझावण तांईरे ॥कु०॥
॥ ३६ ॥ मुख सूं कहै प्रकरण सहु मानां, तो इतरा
बोल न मानो किण लेखे। अभिन्तर आंख हिया री
फूटी, आप भाख्यो सामो नही देखै रे ॥ कु ॥३७॥
वले मुख सूं कहै जिन आज्ञा मानां, पिण आज्ञा री
नहीं ठीक। आज्ञा रो नाम लेई झूठ बोले, ओ
प्रत्यक्ष पाखण्डीकरे ॥ कु० ॥ ३८ ॥ सुर्याभ ने वांदन
री आज्ञा, पिण नाटकरी आज्ञा नही दीध। मन माहिं
नाटक ने नही अनुमोद्यो, रायप्रसेणी प्रसिद्धरे ॥कु०॥
॥ ३९ ॥ वर्द्धमान जिण आगे नाटकरी, आज्ञा न
दीधी तहतीक। तो प्रतिमा आगे आज्ञा किम देसी,
ओ पिण आंधां ने नहीं छै ठीकरे ॥ कु० ॥ ४० ॥
आज्ञा आज्ञा कर रह्या मूरख, आज्ञा रा मूढ़ अजाण।
भोला ने भरम मे पाड विगोया, ते पिण डूबै कर कर
ताणरे ॥ कु० ॥ ४१ ॥ जिन आज्ञा माहिं धर्म कह्यो,
जिन आज्ञा बारे नही अंश। ए समयक्त रा मूल
मूढ़ अजाण। इण रह्या जीव निधंसरे ॥ कु० ॥ ४२ ॥
कही कही ने कितरोयक कहूं, आज्ञा दया एक

॥ ढाल ॥

शिव मठ जातां चोरटारे, शंक कांख छै दोयजी। स्वाम वचन ने साथे लियांरे भाई पूज्य वचनने साथे लियां, थारे विघ्न कदे नहीं होय ॥ सुगणजन स्वाम वचन षवलोयजी ॥ स्वाम वचन री आसतारे थारो सफल जमारो होय ॥ सु० ॥ १ ॥ परम आसता गणि तणीरे, समकित दीपक जोयजी। सुध सरध्यां हुवे समगतीरे भाई सुध० वैराग तेल समोय ॥ सु० ॥ २ ॥ भगवती शतक पच्चीसमे रे छट्ठै उदेशै जोयजी। छः नियंठा कह्मा जुवा जुवारे भाई छः० ये तो छट्ठै सूं चवदमें होय ॥ सु० ॥ ३ ॥ पडिसेवी मूल उत्तर तणोरे, डांडे सूँ सेन्या भणोय जी। पुलाक नियंठो तसु कह्योरे भाई पु०, ओ तो छट्ठे गुण ठाणे होय ॥ सु० ॥ ४ ॥ पड़िसेवी उत्तर गुण तणोरे, बुकस बीजो जोयजी। जगन दोय से कोड़ सूं रे भाई ज०, ओछा कदे नहीं होय ॥ सु० ॥ ५ ॥ पडिसेवी मूल उत्तर तणोरे, पडि-सेवणा अवलोयजी। च्यार से कोड़ अधन्य कह्मारे भाई च्या०, त्यांरो विरहो कदी नहीं होय ॥ सु० ॥६॥ कषाय कुशील चौथो कह्योरे, छट्ठे सूँ दशमें जोयजी। छः लेश्या पांच शरीर छैरे भाई छः०, वले समुद्घात

१५ ॥ हय रूपकरी बहु जोजन जावे, तास मुनि कह्यो सोयजी। निश्चय अघ्व कह्यो नहीरे भाई नि०, तेपिण दण्ड लियां सुध होय ।सु० ॥ १६ ॥ मासो चौमासो निशीथमें रे. पाठ सैकड़ां जोयजी। विराधक कह्यो दण्ड लियां विनारे भाई वि०, आराधक हुवे आलोय ॥ सु० ॥ १७ ॥ एकम पूनम चंद जिसारे, वद पख चंद सुजोयजी। ज्ञाता अध्येन दशमे जिन कह्यारे भाई ज्ञा० म्हांरा साध साधवी होय ॥ सु० ॥ १८ ॥ छट्ठो गुणठाणो जावे नहीरे, वीर वचन अवलोयजी। खामो देख छद्मस्थनीरे भाई खा०, कांई समकित तूं मत खोय ॥ सु० ॥ १९ ॥ नुंई दोचा आवे जिसोर, दोषण सेवे कोयजी। अथवा थाप करे दोपनीर भाई अ०. फिरे छट्ठो गुणठाणो सोय ॥ सु० ॥ २० ॥ छट्ठे गुणठाणे साधु छे रे, असाधु सरधले कोयजी। मिथ्यात आवे तेहनेरे भाई मि०. तूं दश बोलांमे जोय ॥ सु० ॥ २१ ॥ मासो चौमासो दण्ड थकोरे, छट्ठो गुणाठाणो नहिं फिरे सोयजी। फिरे ऊंधी सरधा तथा थरपणीरे भाई फि०, तथा जबर दोष थी जोय ॥ सु० ॥ २२ ॥ सूत्र तणी नहीं धारणाजी, विमल विवेक न होय जी। खामो देख छद्मस्थनोरे भ खा०. खूरख देवे रोय ॥ सु० ॥ २३ ॥ सां

अथ मोहजीत राजारो व्याख्यान.

॥ दोहा ॥

सुधर्म स्वरगे सुधर्मी । सभा मांय शक्रेंद ॥ सहस्र चौरासी सुर भला । सामानिक सुखकंद ॥ १ ॥ त्रि लख छतीस सहस्र सुर । आतम रक्षक अधिकार ॥ तीन पुरुषदा परवरी । लोक पाल वली च्यार ॥ २ ॥ अग्रमहिषी आठ वर । एक २ नो परिवार । सोलह २ सहस्र सहु । एक लाख अठावीस हजार ॥ ३ सुर सहु सुणतां अमरपति । आखे वैण उदार ॥ मोहजीत राजा तणो । निरमोही परिवार ॥ ४ ॥ इन्द्र प्रशंसा करी घणी । सांभलने इक देव ॥ आयो नृप छलवा भणी । आणी अति अहमेव ॥ ५ ॥ राय कुमर प्रच्छन्न कियो । धाख्यो योगी भेष ॥ कुमर किहां लाधो नहीं । जोय रह्या सुविशेष ॥ ६ ॥ एक दासी फिरती थकी । आई नगरी बाहार ॥ योगी छोडनें गल गलो । आखे वयण तिवार ॥ ७ ॥

रोगी योगी कहणरो । निज आतम स्वभावरो अजाण । कुमर रो मरण देख दुमणो थयो । थारे मोटो रोग पिछाण ॥ सां ॥६॥ जे जिवणसें हर्ष प्रमोद होवे घणो । मरणमें होवे दिलगीर ॥ राग द्वेषमे खुता मानवी । ते किम पामै भवजल तीर ॥ सां ॥ ७ ॥ असयती जीवरो वंछे जीवणो । ते प्रत्यच्छ राग पहिचान ॥ राग छे तेतो दशमो पापछे । राग नें दया कहैते अजाण ॥ सां ॥ ॥ ८ ॥ मरणो वंछे तेतो द्वेषछे । ते ओलखणो सोरो जगमांय ॥ राग ओलखणो दोरो तेहथो । श्री वीतराग कहै वाय ॥ सां ॥९॥ जे राग नें द्वेष तणें वश मानवी । ज्यांरे हर्ष शोक रह्यो व्याप ॥ ते भ्रमण करसी चिहुंगत संसारमे । सहसी नरक निगोद सन्ताप ॥ सां ॥ १० ॥ एह फल मोह कर्म नां जिन कह्या । ते टाले राग द्वेषनी ताप ॥ निज आतम ज्ञान स्वभावे रम रह्या । सम भावे चित्त थाप ॥ सां ॥ ११ ॥ जीव अनंता नित्य ही मर रह्या । मच्छ गला गल पेख ॥ तूं सोच करमीरे किण किण जीवरो । तिण स्युं सम भाव रहणो विशेष ॥ सां ॥ १२ ॥ योगी तो सुण ने रह्यो जोवतो । दूणारे तो मूल न दाह ॥ अद्भुत रचना देखो एहनी । मन दृढ़ बोले अथाह ॥ सां ॥ १३ ॥

राचैरे ॥ मोहजाल तन पहरनें । जीव नटवा जिम नावैरे ॥ मूर्ख नर माचेरे ॥ यो ॥ ४ ॥ बाप मरी बेटो हुवे । माता मर हुवे नारीरे ॥ इत्यादिक सगपण घणा । कर्म्म तणी गत भारीरे ॥ चाली सांग अपारीरे ॥ यो ॥ ॥ ५ ॥ यो वार अनन्ती पुत्र हुवो । हूं बाप अनन्ती वारोरे ॥ मोह तणे प्रताप स्युं । सह्या दुःख अपारोरे ॥ नरक निगोद मझारोरे ॥ यो ॥ ६ ॥ ज्ञान दर्शण गुण निरमला । ए सुखदायक म्हांरारे । और वस्तु म्हारी नही । ए तो सर्व निकारारे ॥ दुःख दायक सारारे ॥ यो ॥ ७ ॥ निज स्वभाव भूली रह्यो । मोह वशे मतवालोरे ॥ बुद्ध होण जीव बापड़ा । पामे दुःख असरालोरे ॥ नरक निगोद विचालोरे ॥ यो ॥ ८ ॥ सोच करे गई वस्तुनो । महा मूर्ख बालारे ॥ समझाया समझे नहीं । दृढ़ कर्मां ना तालारे ॥ जीव पड़े जंजालारे ॥ यो ॥ ९ ॥ हर्ष नहीं सम्पति विषे । विपत्ति पड़्यां नहीं विषवादोरे ॥ धीरपणे स्थिर आत्मां धर्म अमोलख लाधोरे ॥ ज्यांरे सदा समाधोरे ॥ यो ॥ ॥ १० ॥ कष्ट पड़्यां कायम रहै । शूरा रहै सम भावैरे ॥ निश्चल मन स्थिर आत्मा । चित्त विमन नहीं थावैरे । ते स्याणां सुख पावैरे ॥ यो ॥ ११ ॥ निन्दा स्तुति सुख दुःख । लाभ अलाभ मझारोरे ॥ सम चित्त

ढाल ३ जी

(देशी—मुनी बलभद्र वसैरे वैरागमें)

रे भोला भ्रम में क्यों भमै (ए आंकडी) । क्यों तुझ झालज ऊठीरे ॥ किणरी माता सुत केहनां । ए सहु वातज झूठीरे ॥ रे भोला भ्रम में क्यों भमै ॥१॥ ज्ञान दर्शण चरण तांहरा । ते तो कोइय न लूंटैरे ॥ निरमल गुण शुद्ध आत्मा । कहो किण विध खूटैरे ॥ २ ॥ सम्पत्ति सहु स्वपनां जिसी । योंही कर रह्या आशारे ॥ दिन थोड़ा में बिललावसी । पाणी ना पतासारे ॥ रे ॥ ३ ॥ लाखां मनुष्य भेला हुवे । देश २ नां आई रे ॥ मास तांई भेला रहै पिछा आवै जिण दिश जाईरे ॥ रे ॥ ४ ॥ मनुष्य विछड़िया तेहनो । दूचरज मूल न आवैरे ॥ ते मास तांई भेला रह्या । दूचरज तेह कुहावैरे ॥ ५ ॥ अनन्ता प्रमाणु भेला थई । कुमर नो शरीर बन्धाणो रे ॥ इतरा वर्ष रह्या एकठा । हिव विछड़िया पिछाणो रे ॥ रे ॥६॥ पुद्गल विछड़िया तेहनो । दूचरज नहीं लिगाररोरे ॥ एता वर्ष रह्या एकठा । दूचरज एह अवधारोरे ॥७॥ एह बार अनन्तो पुत हुवो । हूं बार अनन्ती हुई मातारे ॥ मोह तणों प्रतापस्युं । किया नया नया

॥१॥ कुमर अवर ही सम्पजे। मातानें युगमांय ॥ जाय कहूं हिव नारनें। ते दुःख धरे अथाय ॥२॥ एहवो करी विचारणा। आयो नारी पास ॥ थर हर लाग्यो धूजवा। वोले थई उदास ॥३॥

॥ सोरठा ॥

सांभल वहनी वातरे। तुज वल्लभ मुझ मठ कन्हे ॥ सिंह हण्यो साचातरे। कहतां हिवड़ो थर हरे ॥१॥

ढाल ९ थी

जावो २ के करो सहिया वैठो जाजम बिछाय पदेशो।

मुझ वल्लभ मुझ मांय बिराजै। ज्ञान चरण गुण धीर ॥ अवर सहु सुपनांरी माया। तूं क्युं हुवो दिलगीर ॥ तूं क्युं हुवो दिलगीर ॥ योगेश्वर ॥ तूं क्युं हुवो दिलगीर ॥ आतम स्वरूप ओलख करणीस्युं ज्युं पामों भव जल तीर ॥१॥ स्थिति अनुसार परिवार सहु जन। मात तात सुत वीर ॥ पिउ तिरिया वहनि भतीजी भाणेजी। कोइय न भांजै भीर ॥ को० यो० को० ॥ २ ॥ तूं क्युं योगी थर हर कांप्यो। केम हुवो दिलगीर ॥ भसम लगाय भ्रम नही भाग्यो। नहीं जाण्यो निज गुण हीर न० यो० न० ॥ आतम ॥ ३ ॥ मुझ

सांभल तूं मुझ वीर ॥ सां० यो० सां० ॥ आत्म ॥११॥ तूं योगेश्वर धूजण लागो, न आयो ज्ञान सधीर । ज्ञान दर्शण घर है अति ऊंडो, तूं फसियो मोह जंजीर ॥ तूं० यो० तूं० ॥ आत्म ॥ १२ ॥ योगी सुण मन मांय विमासे, अहो अहो वचन अमीर । धन २ सुन्दर अधिक अमोलक, धन २ ज्ञान गम्भीर ॥ ध० यो० ध० ॥ आत्म ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

योगी सुण हर्ष्यो घणो, मनसें करै विचार । मोहजीत राजा तणो, निरमोही परिवार ॥ १ ॥ इन्द्र प्रशंसा करी, ते सहु साची जाण । योगी रूप फेरि कियो देव रूप पहिचाण ॥ २ ॥

ढाल ५ मी

धीजकरे सीतासतीरे लाल

कानां कुण्डल झल हले रे लाल, हिवड़े शोभे हारहो । राजेश्वर । आंगुलियां दश मुद्रिका रे लाल, मस्तक मुकट उदार हो । राजेश्वर । धन २ करणी तांहरी रे लाल ॥ १ ॥ धन २ तुज परिवार हो, रा० देव गुरु धन थांहरा रे लाल । धन तुझ ज्ञान उदार हो । राजेश्वर ॥२॥ ध० ॥ रत्न तिलक अति झल हले

चौसे साते समय रे लाल, जेठ सुद बीज रविवार हो। रा० जोड़ कीधी सोहजीतनीं रे लाल, शहर सुजाण गढ़ मभार हो॥ रा०॥ ११॥

॥ उपदेशिक ढालें ॥

ढाल १ ली

लाल हजारी रो जामो विराजे चढवा तुरंगी घोडा रे एदेशी।

सुख खिण मात्र कह्या जिन स्वामी, दाख्या दुःख बहु कालोरे। अनर्थ खान मुक्तिना बेरी, काम भोग मोह जालोरे। काम किम्पाक समा जिन भाख्या। दुःख अनन्ता ना दातारे। परिचय काम वंच्छा परहरिये, जो चहिये सुख सातारे॥ का०॥ १॥ घोर नरकने विषे पड़े जे, पाप कर्म करतारोरे। भारज उत्तम धर्म आचरे, सुर शिवगत सुख भारीरे॥ का०॥ २॥ अब उपलेप लगे भोगीरे, अभोगी तो नाहीं लेपायोरे। भोगी संसार मे भ्रमण करै छै, भाग तजे थी मुकायोरे॥ का०॥ ३॥ न करै कंठ छेदन अरि जेहु, अनरथ तेहु विशेषोरे। करै पोतानी दुष्ट आतम कर, तेम तुमे जाणेसोरे॥ का०॥ ४॥ अष्टमो बारमो षट खण्डाधिप लक्ष्मण कृष्ण मुरारीरे। विषय

ढाल २ दूजी

(देशी वीस वहरमान सदा शाश्वता)

शब्द रूप गंध रस फास धनें, इन्द्रिय विषय विकारी। फुन क्रोधादिक दुष्ट आस्रव मन थे दश शत्रु भारी॥ गुणीजन तजो काम विषकारी, विषय तज्यां थी लहिये गु० अविचल सम्पत्ति सारी॥ गु० ॥१॥ रागद्वेष फुन स्त्रिय पाश्या, परम भयङ्कर भारी। जात एकेन्द्रीय आदि तणा पन्थ, कह्यो सिद्धान्त मझारी। गु० ॥ २ ॥ असंख्य कालचक्र च्यार थावर में, उत्कृष्ट पणे विचारी। अनन्तकाल चक्र वनस्पति मे, काय स्थित अवधारी ॥ ३ ॥ असंख्यात ले लोक आकाशे, प्रदेश प्रमाण विचारी॥ काल चक्र दुःख सह्यार काम थी, थावर च्यार मझारी ॥४॥ आंगुल क्षेत्र नभ प्रदेश प्रति, इक २ समय मझारी। इक २ समय प्रदेश काढतां, असंख्य काल चक्र धारी ॥५॥ वली अनन्ता लोक आकाशे, प्रदेश प्रयोग विचारी। काल-चक्रतनु स्थिति काम थी, वनस्पतिमें धारी ॥६॥ तेतीस सागर ब्रह्मदत्त फुन संभूमिदत्त विचारी। पर-सरामने बसु काम थी. सप्तमी नरक मझारी ॥७॥ लक्ष्मण रावण काली कुमर फुन, दशसागर लग धारी। राग द्वेषने काम थकी दुख, चौथी नर्क मझारी ॥८॥

चक्रीनी, उत्कृष्टी छट्ठी पड़ी हे ॥८॥ तूं तो जाणे कुण मो सम सुन्दर, हूं पुन्यवान पूरी हे ॥९॥ पिण इकदिन पाप उदे हुवां परभव, परबश जमांरे पानै पड़ी हे ॥१०॥ वैतरणी प्रमुख बहु वेदन, तूं सहसी आक्रान्द करी हे ॥११॥ सम्यक्त देशव्रत धार्यां, थारी दुख वेदना सर्व टली हे ॥१२॥ नन्दन वन भिक्षु गण आराध्यां, तूं पामसी अमरपुरी हे ॥१३॥ निन्दक टालोकड़ तूं मत बंधै, तूं सीख हियामें धरी हे ॥१४॥ ए धाड़वी समकित ना लूंटारा, ज्यांरी संगत दूर करी हे ॥१५॥ बार २ स्यूं कहिये तोने, तूं गणमें स्थिर पद धरी हे ॥१६॥ गणपतिनी पक्की बंछा राख्यां, थारा मन बंछित कारज सरी हे ॥१७॥ उगणीसै गुणतीस चैत सुद, जय जश शिक्षा उचरी हे ॥१८॥

ढाल ४ थीं

(महला में बैठी हो राणी कमलावती)

ओछो तो जमर ,जिणमे दुःख घणा, व्याध रोगादिक जाण । विविध प्रकार संयोग वियोगनो, शरीर मानसीक पिछाण ॥ सांभल रे भविजन वारु तो वाणी हो श्रीजिनराजनी ॥१॥ काम किम्पाक कटुक फल पाड़वा, दुःण बहु सुख खिणमात्र । शिव सुख केरा बैरी जिन कह्या, अनरथ खान विख्यात ॥ सां० ॥२॥

जी ॥ से० ॥२॥ दूजे शतक भगवतो मांयो, वर पंचमु-
देशे वायोजी ॥ से० ॥ ३॥ मुनि सेव कियांई पावे, दश
बोलांरो प्राप्त थावेजी ॥ से० ॥ ४ मुनि सेव्यां सुणवा
पावे, पछे ज्ञान विज्ञानज थावेजी ॥ से० ॥५॥ पचखाण
संयम सुखदाई. तसु फल अनआस्रव थाईजी ॥ से० ॥
॥६॥ तपने बले कर्म बोदाणो, अक्रियाने सिद्धि निर-
वाणोजी ॥ से० ॥ ७॥ सेवा थी मिटै कुलच्छन, जडनर
पिण होय विचक्षणजी ॥ से० ॥८॥ शुभ लंच्छन सेवा-
थी पावे, इण भव पिण आणन्द थावेजी ॥ से० ॥ ९॥
परभव में शिवसुख राचे, सेवाथी गहगट माचेजी ॥से०
॥ १० ॥ गौतम जिण संगत कीधी, गणधर थया प्रथम
प्रसिद्धिजी ॥ से० ॥११॥ उवाई दशमे अंगो, आख्या-
वर पाठ उमंगोजी ॥ से० ॥१२॥ मुनिसेव्यां सु प्रसन्न
थावे, तसु जय जयकार जणावेजी ॥ से० ॥१३॥ अशा-
तना अबोधी पावे, इण भव पिण भूंडो थावेजी ॥ से० ॥
॥१४॥ महामुनि अतिशयधारी, तेहना गुण अधिकारी
जी ॥ से० ॥ १५ ॥ इम जाण मुनिने सेवो, वारु
सीख हियामे वेवोजी ॥ से० ॥ १६ ॥ उगणीसै सतरे
उदारु, वद फागुन अष्टमी वारुजी ॥ से० ॥ १७ ॥
जयनगरी जोड़ जणाणी, जय जश सुख सम्पति
जाणीजी ॥ १८ ॥

जी ॥ से० ॥२॥ दूजे शतक भगवती मांयो, वर पंचमु-
देशे वायोजो ॥ से० ॥ ३॥ मुनि सेव कियांई पावे, दश
बोलांरी प्राप्त थावेजो ॥ से० ॥ ४ मुनि सेव्यां सुगावा
पावै, पछै ज्ञान विज्ञानज थावेजो ॥ से० ॥५॥ पचखाणं
संयम सुखदाई, तसु फल अनआस्रव थाईजो ॥ से० ॥
॥६॥ तपने वले कर्म बोदाणो, अक्रियाने सिद्धि निर-
वाणोजो ॥ से० ॥ ७॥ सेवा थी मिटै कुलच्छन, जडनर
पिण होय विचच्चणजी ॥ से० ॥८॥ शुभ लंच्छन सेवा-
थी पावे, इण भव पिण आणन्द थावेजो ॥ से० ॥ ६॥
परभव में शिवसुख राचै, सेवाथी गहगट माचैजो ॥से०
॥ १० ॥ गौतम जिण संगत कीधौ, गणधर थया प्रथम
प्रसिद्धिजो ॥ से० ॥११॥ उवाई दशमें अगो, आख्या-
वर पाठ उमंगोजो ॥ से० ॥१२॥ मुनिसेव्यां सु प्रसन्न
थावे, तसु जय जयकार जणावेजो ॥ से० ॥१३॥ अशा-
तना अबोधी पावै, इण भव पिण भूंडो थावेजो ॥ से० ॥
॥१४॥ महामुनि अतिशयधारी, तेहना गुण अधिकारी
जो ॥ से० ॥ १५ ॥ इम जाण मुनिने सेवो, वारु
सीख हियामें वेवोजो ॥ से० ॥ १६ ॥ उगणीसै सतरे
उदारु, वद फागुन अष्टमी वारुजो ॥ से० ॥ १७ ॥
जयनगरी जोड़ जणाणी, जय जश सुख सम्पति
जाणीजी ॥ १८ ॥

भार। अधिकही भणियोजी हे। ज्ञान ध्यान गलतान, तप रस घुणियोजी ॥ ९ ॥ आज्ञा ले सतगुरु तणी हे, मुनिवर करता उग्र विहार। वणारसी आयोजी हे। कथा तणे अनुसार, एम कुहायोजी ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥

अनित्य सहु इण लोकमें रे, कीम करीजे पाप। अथिर जीतब जग जीवनोरे, आगे बहोत संताप। करो धर्म बहु प्राणियारे ओ संसार असार ॥१॥ जावे परभवने विषे रे, हुई ने निपट निराश। जोर कोई लागे नही रे, जब हुवे बहोत उदास ॥ करो० ॥२॥ नरक तणा दुःख सांभलीरे, पाम्यो अतही त्रास। पश्चा-ताप करे घणोरे, मैं धर्म कियो नही तास। क० ॥३॥ कीम काम भोगां मझेरे, मुरझ रह्यो मूढ़ होय। नहीं धाप्यो न धापसीरे, ए अटप्त कर सोय ॥ क० ॥४॥ आऊखो आयां थकांरे, जावे सरब छिटकाय। धन सज्जन परिवारनो रे, त्राण शरण नहीं थाय ॥ का० ५॥ मूरख मूढ़ जाणे नहीरे, पर भवनो अर्थ कांय। तिण सुं पाप करे घणोरे, डरे नही मन मांय ॥ क० ॥६॥ वेजा करवावे घणारे, संचय करे धन धान। मांस खावे मदिरा पिवेरे, मूरख निपट अजाण ॥ क० ॥७॥ घरसे

॥ मानसीक औषध की ढाल ॥

(राग प्रभाती)

मोह उपशम उपाय समपणो, ए आलम्बन सुख-कारी । नित प्रते हृदय निरन्तर साध्यां, आणन्द होय अपारी ॥ चेतन बेर बेर समझाऊं, मान तूं सीख हमारी ॥ १ ॥ क्रोध मान माया ने लोभ अरि, राग द्वेष दुःखकारी । यां सहुनो उपशम को कारण, समे भाव सुखकारी ॥ चेतन ० ॥ २ ॥ अष्टावीस प्रकृति मांहिली, ए अति क्रूर अनारी । यां सहु को उपशम जिन भाख्यो, ते कारण चित्तधारी ॥ ३ ॥ शान्ति दान्ति समचित दायक, तज मतवाल विकारी । ए मतवाल महादुखदायक, नरकादिक दातारी ॥ ४ ॥ मोह मतवाल मिटै समताकर, मननी लहर निवारी । एह बातनो हेतु जाणै, तो हुवे सुख अपारी ॥५॥ अव-गुण पोता ना अवलोकी, ध्यान निरंतरधारी । समचित कर अवगुण ने छोड़े, ते सयणा नर नारी ॥६॥ क्रोध मान माया ने लोभनी, लहर तणो परिहारी । खिण २ उपयोग देई ने, ओलखे समचित धारी ॥७॥ अवसर तिरण सामग्री, ते पामी इहवारी । खिणमात्र पिण प्रमाद मत कर, तज मतवाल विकारी ॥८॥ सात कर्म नो उपशम न हुवे, इम भाख्यो जगतारी । उपशम

स्वाम भिक्षु प्रगटे। जग मांहि कीरत थईरे॥ श्रीजिन आणा शिर धरी। वर न्याय वातां कहीरे कहीरे स्वाम साचा अद्भुत वाचा कहीरे॥१॥ आगुंच उत्तराध्येनमें। इण आर पंचम मंहीरे। जिन विना शिवपंथ होसी। संत तंत सहीरे॥ सहीरे॥ स्वा० ॥२॥ समत अठारा तेपना पछे। सूत्र संग वृद्धि थईरे। वंक चुलिया मांहि वारता। तूं जोय प्रत्यक्ष सहीरे॥ सहीरे॥ स्वा० ॥३॥ द्वादश संत आगे हुंता, त्यां पछे वृद्धि थईरे। हेम चरण सु वृद्धि कारण, प्रत्यक्ष वेण मिलई रे। मिलई रे॥ स्वा० ॥४॥ स्वाम पारश सारिषा। चिन्तामणि कर लहीरे॥ भवदधि पोत उद्योत करवा। स्वाम सूरज सहीरे॥ सहीरे॥ स्वा० ॥५॥ स्वाम भिक्षू समरिया। उगणीस चवदे मंहीरे। बीदासर चौमासमे जय जश कीरत थईरे॥ थईरे॥ स्वा० ॥ ६ ॥

॥ मर्याद की ढाल ॥

(देशी—पखवाड़े की)

स्वाम भिक्षु भजले भाई। स्वाम समरण है शिव साई॥ ए आंकडो॥ आचार्य जबर आप जाणी। बुद्ध उत्पतिया अति ठाणी॥ समय रस पेख वीर वाणी। प्रगट मग कियोज पेछाणी। अष्टादश सोले समै। सुदि पूनम आषाढ॥ संजम स्वाम समाचर्योस कांई।